mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-28 अंक-324 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

25 नवंबर 2024 सोमवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

नीतिश ने सभी को ...

@ पेज 7

दो भारतीय बने आईपीएल इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी

जेद्दा (एजेंसी)। विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत आईपीएल इतिहास के सबसे महंगे क्रिकेटर बन गए हैं। सऊदी अरब के जेद्दाह में चल रहे आईपीएल मेगा ऑक्शन में लखनऊ सुपर जायंट्स ने उन्हें 27 करोड़ रुपए में खरीदा। इसी ऑक्शन में आईपीएल इतिहास के दूसरे सबसे महंगे खिलाड़ी श्रेयस अय्यर बने। उन्हें पंजाब किंग्स ने 26.75 करोड़ की बोली लगाकर खरीदा। इस ऑक्शन में बिकने वाले वह पहले कप्तान हैं। पहली बार ऑक्शन में आए ऋषभ पंत ने चंद मिनटों के भीतर ही आईपीएल इतिहास के सबसे महंगे प्लेयर बनने का रिकॉर्ड तोड़ दिया। स्टार विकेटकीपर पर लखनऊ सुपर जायंट्स ने 27 करोड़ की मोटी बोली लगाकर हर किसी को हक्का-बक्का कर दिया। इस तरह लखनऊ सुपर जायंट्स ने शायद अपना नया कप्तान भी चुन लिया है। चंद मिनट पहले ही पंजाब किंग्स को श्रेयस अय्यर ने 26 करोड़ 75 लाख रुपये की मोटी बोली लगाकर अपने साथ जोड़ा था, जो आईपीएल की सबसे बड़ा बोली का रिकॉर्ड भी था। 2016 में फाइनल तक पहुंची

- **पंत 27 करोड़ में लखनऊ, श्रेयस 26.75 करोड़ में पंजाब टीम में गए, चहल सबसे महंगे स्पिनर**

अंडर-19 वर्ल्ड कप टीम के विकेटकीपर रहे ऋषभ पंत दिल्ली के लिए घरेलू क्रिकेट खेलते हैं। बड़े-बड़े शॉट लगाने की क्षमता ने उन्हें आईपीएल में हाथों-हाथ एंट्री दिला दी। दिल्ली डेयरडेविल्स (दिल्ली कैपिटल्स) ने उन्हें अपने साथ जोड़ा। 2016 से 2022 तक उन्होंने लगातार दिल्ली की ओर से दम दिखाया। ऋषभ पंत ने दिल्ली कैपिटल्स के लिए 111 मैच में 3284 रन बनाए हैं, जिसमें एक शतक और 18 अर्धशतक शामिल हैं। 128 उनका बेस्ट स्कोर रहा है, जो उन्होंने 2018 में बनाया था। वहीं 29 साल के श्रेयस अय्यर ने 2015 में आईपीएल में दिल्ली कैपिटल्स के लिए खेलते हुए डेब्यू किया था। जब से अब तक अय्यर ने आईपीएल में 116 मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने 127 के स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी करते हुए 3127 रन बनाए हैं। अय्यर का हाईएस्ट स्कोर इंडियन प्रीमियर लीग में 96 रन है। उनके बल्ले से इस बड़े टूर्नामेंट में 21 अर्धशतक देखने को मिले हैं। अपनी कप्तानी में अय्यर ने कोलकाता को जिताया था।

संक्षिप्त समाचार

बिहार विधानसभा में बीजेपी की और बढ़ी ताकत

- 80 विधायकों के साथ बिहार विधानसभा में बन गई सबसे बड़ी पार्टी

पटना (एजेंसी)। बिहार में हुए विधानसभा उपचुनाव में एनडीए को बड़ी जीत मिली है। चारों सीटें जीतकर एनडीए ने अपनी ताकत बढ़ा ली है। इस जीत से जदयू, बीजेपी और हम के विधायकों की संख्या में इजाफा हुआ है, जबकि राजद और कांग्रेस को नुकसान उठाना पड़ा है। रामगढ़ और तारारी सीटों पर जीत के साथ ही बीजेपी अब 80 विधायकों के साथ सदन में सबसे बड़ी पार्टी बन गई है। वहीं, बेलागंज सीट जीतकर जदयू के विधायकों की संख्या 45 हो गई है।

रूस ने यूक्रेन के कब्जे से छुड़ाई अपनी 40 फीसदी जमीन

- कुर्स्क की 1376 स्क्वेयर किमी जमीन यूक्रेन ने कब्जाई थी

कीव (एजेंसी)। यूक्रेन ने अगस्त में रूस के कुर्स्क इलाके में अचानक हमले किए थे। इस दौरान यूक्रेन ने कुर्स्क के एक बड़े इलाके पर कब्जा कर लिया था। हालांकि अब रूस ने

यूक्रेन के कब्जे में से 40 फीसदी जमीन को वापस छीन लिया है। इसकी जानकारी यूक्रेन के जनरल स्टाफ के एक अधिकारी ने दी। अधिकारी के मुताबिक यूक्रेन ने कुर्स्क प्रांत में 1376 स्क्वेयर किमी जमीन कब्जा कर लिया था।

अब देश में कोई उपचुनाव नहीं लड़ेगी बीएसपी

- खराब नतीजे के बाद मायावती का बड़ा ऐलान, ईवीएम पर फोड़ा ठीकरा

लखनऊ (एजेंसी)। बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती ने उपचुनाव के नतीजों के बाद बड़ा फैसला किया है। उन्होंने देश में कोई भी उपचुनाव नहीं लड़ने का ऐलान करते हुए कहा कि बैलट से धांधली तो होती ही थी अब ईवीएम से भी धांधली होने लगी। इसलिये बसपा ने यह निर्णय किया है कि वह देश के किसी भी राज्य में अब कोई भी उपचुनाव नहीं लड़ेगी। यूपी की पूर्व उपमुख्यमंत्री ने कहा,यूपी में 9 सीटों पर हुए चुनाव और फिर उसके नतीजे के बाद लोगों में ईवीएम को लेकर आम चर्चा है। पहले

संसद का विंटर सेशन आज से, हंगामे के आसार

19 बैठकें,वक्फ समेत 16 विधेयक लिस्ट में,अडाणी बनेंगे मुख्य मुद्दा

नई दिल्ली (एजेंसी)। 18वीं लोकसभा का तीसरा सत्र (शीतकालीन सत्र) कल 25 नवंबर से शुरू होने वाला है। इससे पहले रविवार को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में सर्वदलीय बैठक हुई। इस दौरान 30 पार्टियों के कुल 42 नेता मौजूद थे। कांग्रेस समेत विपक्षी नेताओं ने लोकसभा में पहले दिन अडाणी मामले पर बहस की मांग की है। अमेरिका की न्यूयॉर्क फेडरल कोर्ट ने गौतम अडाणी पर सोलर एनर्जी कॉन्ट्रैक्ट हासिल करने के लिए भारतीय अधिकारियों को लगभग 2,200 करोड़ रुपए की रिश्वत देने की पेशकश का आरोप लगाया है। राहुल गांधी ने इस मामले पर जेपीसी की मांग रखी है। कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी ने कहा कि उनकी पार्टी ने मणिपुर हिंसा, प्रदूषण, रेल दुर्घटनाओं पर भी संसद में चर्चा करने का प्रस्ताव रखा है। हालांकि संसदीय कार्यमंत्री किरण रिजिजू ने कहा- चर्चा के मुद्दों पर फैसला कार्य मंत्रणा समिति करेगी। विपक्ष सदन की कार्यवाही सुचारू रूप से चलने दे।

वक्फ बिल पर बनी जेपीसी ने मांगा और समय

वक्फ संशोधन विधेयक पर संयुक्त समिति के 29 नवंबर को संसद में अपनी रिपोर्ट पेश करने की उम्मीद है, लेकिन यह तभी संभव है जब वह मानसून सत्र में दी गई समय सीमा का पालन करती है। हालांकि विपक्षी सदस्यों ने पैनल को अपनी रिपोर्ट देने के लिए समय बढ़ाने की मांग की है। हालांकि संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने कहा कि जेपीसी का कार्यकाल बढ़ाने का प्रावधान है, लेकिन अभी तक इस पर कोई चर्चा नहीं हुई है। इस पर चर्चा कार्य मंत्रणा समिति में होनी चाहिए।

सत्र में कुल 16 बिल, 11 पर चर्चा, 5 मंजूरी के लिए पेश होंगे

संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान कुल 16 विधेयक पेश किए जाने हैं। इनमें से 11 विधेयक चर्चा के लिए रखे जाएंगे। जबकि 5 कानून बनने के लिए मंजूरी के लिए रखे जाएंगे। वन नेशन वन इलेक्शन के लिए प्रस्तावित विधेयकों का सेट अभी सूची का हिस्सा नहीं है, हालांकि कुछ रिपोर्ट्स में कहा गया है कि सरकार इसे सत्र में ला सकती है।

आज हो सकता है 'महायुति' सरकार का शपथ ग्रहण

- मुख्यमंत्री पद पर सस्पेंस बरकरार, दो डिप्टी सीएम रहेंगे कायम

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में शानदार जीत दर्ज करने के बाद, भाजपा-नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन ने सरकार बनाने का दावा पेश करने की तैयारी कर ली है। शिवसेना (शिंदे गुट) के वरिष्ठ मंत्री दीपक केसरकर ने बताया कि शपथ ग्रहण समारोह कल यानी सोमवार को आयोजित होने की संभावना है। शपथ से पहले

मुख्यमंत्री पद को लेकर भाजपा नेता देवेंद्र फडणवीस और एकनाथ शिंदे के बीच कड़ी टक्कर है। रिपोर्ट के मुताबिक, शपथ ग्रहण समारोह में केवल मुख्यमंत्री और उनके संभावित डिप्टी शपथ लेंगे। कैबिनेट में शामिल अन्य मंत्रियों के नामों पर अभी कोई निर्णय नहीं लिया गया है। इसके अलावा, सीएम पद को लेकर अंतिम फैसला गठबंधन के सहयोगियों के साथ चर्चा के बाद ही लिया जाएगा। फडणवीस ने कहा, मुख्यमंत्री को लेकर कोई विवाद नहीं होगा।

मन की बात में पीएम ने फिर किया डिजिटल अरेस्ट का जिक्र

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मन की बात रेडियो शो के 116वें एपिसोड में स्वामी विवेकानंद की 162वीं जयंती, एनसीसी दिवस, गयाना यात्रा, लाइब्रेरी जैसे मुद्दे पर बात की। पिछली बार की तरह पीएम मोदी

- **बोले-लोगों को समझाना होगा सरकार में इसका प्रावधान नहीं,यह लोगों को फंसाने की साजिश**

ने कहा- हमें बार-बार लोगों को समझाना होगा कि सरकार में डिजिटल अरेस्ट का कोई प्रावधान नहीं है। यह एक खुला झूठ और लोगों को फंसाने की साजिश है। 115वें एपिसोड में उन्होंने डिजिटल अरेस्ट जैसे फ्रॉड से बचने के लिए तीन स्टेप रुको, सोचो और एक्शन लो अपनाने की बात कही थी। पीएम ने एनसीसी डे पर कहा कि जब हम एनसीसी का नाम सुनते हैं, हमें अपने स्कूल और कॉलेज के दिन याद आ जाते हैं। मैं खुद एनसीसी कैडेट रह चुका हूं, इसलिए मैं पूरे आत्मविश्वास से कह सकता हूं कि उससे मिले अनुभव मेरे लिए अमूल्य हैं। 024 तक एनसीसी से 20 लाख से ज्यादा युवा जुड़े हैं। पहले की तुलना में, 5 हजार नए स्कूलों और कॉलेजों में एनसीसी का प्रावधान किया गया है। पहले एनसीसी में लड़कियों की संख्या सिर्फ 25 फीसदी थी। अब यह बढ़कर लगभग 40 फीसदी हो गई है, जो एक बड़ा बदलाव है। एनसीसी युवाओं में अनुशासन, नेतृत्व और सेवा की भावना विकसित करती है।

यूपी के संभल में भारी हिंसा,तीन लोगों की मौत

कमिश्नर ने कहा-छतों से फायरिंग हुई,परिजन बोले-पुलिस की गोली से मौत

संभल (एजेंसी)। संभल की जामा मस्जिद में सर्वे के दौरान भड़की हिंसा में तीन युवकों की मौत हो गई। एसपी संभल ने इसकी पुष्टि की है। एक युवक के परिजन का दावा है कि पुलिस की गोली से मौत हुई है। इधर, दो लोगों की मौत की खबर फैलते ही शहर में फिर तनाव हो गया। सपा सांसद बर्क के इलाके में पथराव की घटना हुई है। हिंसा के बाद डीआईजी, आईजी मौके पर पहुंच चुके हैं। दरअसल, रविवार सुबह मस्जिद के सर्वे के लिए टीम पहुंची थी। इस दौरान करीब दो हजार की संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग पहुंच गए। उन्होंने सर्वे का विरोध किया। भीड़ मस्जिद के अंदर जाने पर अड़ गई। पुलिस ने रोकने की कोशिश की तो कुछ लोगों ने पथराव कर दिया। इसके बाद भगदड़ जैसे हालात हो गए। अचानक पथराव शुरू हो गया, पुलिस को भागना पड़ा। बवाल इतना बढ़ गया कि पुलिस ने पहले आंसू गैस के गोले दागे फिर

लाठीचार्ज करके भीड़ को खदेड़ा। हालात कई घंटे से बेकाबू है। कई घंटों तक गलियों में जगह-जगह पथराव होता रहा। उग्र भीड़ ने कई गाड़ियों में आग लगा दी। पथराव में एसपी समेत कई पुलिसकर्मी घायल हो गए। डिप्टी कलेक्टर भी चोटिल हुए हैं। एक पुलिसवाले को भी गोली लगी है। इधर, अखिलेश यादव ने लखनऊ में दावा किया कि संभल में बीजेपी ने बवाल कराया है। ताकि चुनाव में की गई धांधली की चर्चा न हो। दरअसल, सुबह 6.30 बजे डीएम-एसपी के साथ एक टीम जामा मस्जिद का सर्वे करने पहुंची थी। टीम देखकर मुस्लिम समुदाय के लोग भड़क गए। कुछ ही देर में करीब दो हजार से ज्यादा लोग जामा मस्जिद के बाहर पहुंच गए। भीड़ मस्जिद के अंदर जाने पर अड़ गई।

कोर्ट ने सर्वे कराकर एक हते में रिपोर्ट देने को कहा था

जामा मस्जिद का 5 दिन में दूसरी बार सर्वे करने के लिए टीम पहुंची थी। इससे पहले 19 नवंबर को सर्वे हुआ था। उसी दिन यानी 19 नवंबर को हिंदू पक्ष की संभल शाही जामा मस्जिद के श्री हरिहर मंदिर होने की याचिका पर कोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट ने मस्जिद का सर्वे करवाकर एक हफ्ते के अंदर रिपोर्ट पेश करने के आदेश दिए। 26 नवंबर को रिपोर्ट पेश करनी है। 29 नवंबर को इस पर सुनवाई होगी।
संभल हिंसा पर मुरादाबाद के मंडलायुक्त ने कहा-सर्वे शांतिपूर्ण तरीके से चल रहा था।

मणिपुर हिंसा

सुरक्षाबलों की 288 कंपनियां तैनात, इंफाल घाटी में सर्चिंग

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर सरकार ने 7 जिलों में मोबाइल इंटरनेट सर्विस पर लगी रोक को दो दिन के लिए और बढ़ाया गया। इंफाल पश्चिम, इंफाल पूर्व,

- सात जिलों में लगा इंटरनेट बैन दो दिन और बढ़ाया, विधायकों के घर पर हमले मामले में अब तक 34

काकचिंग, बिष्णुपुर, थौबल, चुराचांदपुर और कांगपोकपी जिलों में 16 नवंबर को पहले दो दिन के लिए इंटरनेट सर्विस बैन की गई थी। मणिपुर में हिंसा लगातार जारी है। इसी को ध्यान में रखते हुए बैन को लगातार बढ़ाया जा रहा है। गृह विभाग ने नोटिस जारी किया है। इससे पहले 19 नवंबर को सरकार ने ब्रॉडबैंड सर्विस से बैन हटाया था। जिससे स्कूल-कॉलेजों, अस्पतालों, सरकारी ऑफिसों के काम नहीं रुकें। वहीं, 16 नवंबर को विधायकों के घरों में तोड़फोड़-आगजनी के मामले में 2 और लोग गिरफ्तार किए गए। पुलिस ने अब तक 34 लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के मुताबिक और भी लोगों की तलाश की जा रही है। इसके लिए इंफाल घाटी में सर्चिंग जारी है। 11 नवंबर को जिरिबाम में सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में 10 कुकी-जो उग्रवादियों को मार गिराया था।

बुरे फंसे नेतन्याहू, भविष्य पर खड़े हुए सवाल

- विदेश में गिरफ्तारी वारंट,इजरायल में चल रहा भ्रष्टाचार का मुकदमा

तेल अवीव (एजेंसी)। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू फिलहाल एक मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं। उन पर घरेलू और अंतरराष्ट्रीय, दोनों स्तर पर कानूनी मामले चल रहे हैं। एक तरफ अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय ने गुरुवार को नेतन्याहू के खिलाफ गाजा में युद्ध अपराध के लिए गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। वहीं दूसरी ओर नेतन्याहू को इजरायल में भी भ्रष्टाचार के एक मुकदमे में गवाही देनी है। दोनों ही मामले उनके लिए मुश्किल खड़ी कर रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, नेतन्याहू के खिलाफ इजरायल में लंबे समय से भ्रष्टाचार का मामला चल रहा है।

तीन राज्यों में बर्फबारी 9 में छाया घना कोहरा

- एमपी-राजस्थान और छत्तीसगढ़ के 15 शहरों में तापमान लगातार दूसरे दिन 10 डिग्री से नीचे

नई दिल्ली/ भोपाल/ जयपुर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के साथ-साथ अब हिमाचल प्रदेश और लद्दाख में भी बर्फबारी का दौर शुरू हो गया है। हिमाचल के कुल्लू जिले के रोहतांग पास और अटल टनल के पास रविवार को बर्फबारी हुई। वहीं, जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा, गुलमर्ग, बांदीपोरा और लद्दाख के लेह में भी रविवार को बर्फबारी हुई। तीनों राज्यों में सोमवार को भी बर्फ गिरने का अनुमान जताया गया है। मौसम विभाग ने देश के 8 राज्यों में घना कोहरा छाने का भी अनुमान जताया है। इनमें पंजाब, हरियाणा, हिमाचल

प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश और दिल्ली शामिल है। उत्तरी राज्यों के साथ-साथ अब मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में भी ठंड लगातार बढ़ रही है। एमपी और राजस्थान 7-7 स्थानों और छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर में तापमान लगातार दूसरे दिन 10 डिग्री से नीचे रहा। मौसम वैज्ञानिकों ने कहा कि पहाड़ों पर बर्फ पिघलने के बाद वहां से आई बर्फीली हवा के कारण मध्य प्रदेश और राजस्थान में ठंड पड़ रही है।

संक्षिप्त समाचार

ऑटोमोबाइल वर्कशॉप में छात्रों को आधुनिक तकनीक की बारीकियां बताई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क और फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित वर्कशॉप में जीएसपी के छात्रों को ऑटोमोबाइल उद्योग की नई तकनीकों और भविष्य की दिशा से अवगत कराया गया। इस वर्कशॉप का मुख्य उद्देश्य उद्योग की बढ़ती मांगों और युवाओं को तकनीकी शिक्षा में नए अवसरों की जानकारी देना था। वर्कशॉप में विशेष रूप से इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड वाहनों की बढ़ती मांग पर ध्यान केंद्रित किया गया। विशेषज्ञों ने छात्र छात्राओं को आधुनिक तकनीकों से संबंधित बारीकियां समझाईं और उद्योग में उनके योगदान को लेकर चर्चा की। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में छात्रों को वास्तविक उद्योग अनुभव प्रदान करने के लिए इंटर्नशिप और ऑन-जॉब ट्रेनिंग की सुविधाओं की जानकारी भी दी गई। संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क के वरिष्ठ निदेशक श्री शमीमुद्दीन ने संस्थान की अत्याधुनिक सुविधाओं का उल्लेख करते हुए युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसरों की जानकारी दी। फेडरेशन के अध्यक्ष श्री आशीष पांडे ने डीलर एसोसिएशन की अपेक्षाओं को साझा किया और संस्थान से उद्योग मानकों पर खरे उतरने वाले प्रशिक्षित छात्रों की आवश्यकता पर जोर दिया।

शहर में बढ़ते प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए ठोस कदम उठाए जाएँ-ऊर्जा मंत्री श्री तोमर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। शहर में बढ़ते प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं, इसके साथ ही साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा जाए। यह बात ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने ग्वालियर में संभागीय आयुक्त कार्यालय में वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा के दौरान कही। उन्होंने नगरीय निकाय के संबंध में विस्तार से चर्चा की। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा कि शहर में प्रदूषण की स्थिति लगातार बढ़ती जा रही है, इसको नियंत्रित करने के लिए ठोस कदम उठाए। कहीं पर भी कचरा न जले, यह भी सुनिश्चित किया जाए। शहर में धूल के कण काफी हो रहे हैं इसलिए सड़कों पर छिड़काव लगातार किया जाए। शहर की साफ सफाई व्यवस्था को लेकर उन्होंने कहा कि सभी सफाई कर्मचारी समय पर साफ सफाई करें। साफ सफाई करते समय उनके पास सुरक्षा उपकरण एवं मास्क, ग्लब्स आदि भी अवश्य हों, इसका ध्यान रखा जाए। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा कि शहर में कई स्थानों पर स्ट्रीट लाइट की दिक्कत है। इसकी सघन मॉनीटरिंग की जाए और स्ट्रीट लाइट सुधार का कार्य कराया जाए। शहर में यातायात व्यवस्था को सुगम करने के लिये सड़कों की रिपेयरिंग का काम भी तेजी से किया जाए। शहर में सीवर ढक्कन बदलने के लिये विशेष अभियान चलाया जाए। बैठक में संभागीय आयुक्त श्री मनोज खत्री, कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान, नगर निगम आयुक्त श्री अमन वैष्णव सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

25 नवंबर से 10 दिसंबर तक चलेगा हम होंगे क़ामयाब अभियान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल पर जेंडर आधारित हिंसा की रोक थाम के लिए जागरूकता अभियान हम होंगे क़ामयाब 25 नवम्बर से 10 दिसंबर तक चलाया जाएगा। महिला बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया 25 नवंबर को कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर से प्रात:10 बजे इस अभियान की शुरुआत करेगी। जेंडर आधारित हिंसा की रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान के तहत महिला सुरक्षा संवाद विषय पर आधारित दो दिवसीय कार्यशाला 25 एवं 26 नवंबर को आयोजित की गई है। कार्यशाला में सरकारी समन्वय और हितधारकों की ज़िम्मेदारी के माध्यम से जेंडर आधारित हिंसा का समाधान, सामुदायिक पुलिसिंग, महिला सुरक्षा में सहयोगी दृष्टिकोण, जेंडर आधारित हिंसा को समझना और स्थानीय कार्यान्वयन के लिए कार्य योजनाओं का विकास, पीड़ितों के लिए समर्थन प्रणाली को मज़बूत करना, वन स्टॉप सेंटर की भूमिका और मनोवैज्ञानिक प्रभाव ,महिला सुरक्षा को बढ़ावा देना त्वरित प्रतिक्रिया तंत्र के माध्यम एम पी डायल 100 से अंतर्दृष्टि, महिलाओं की सुरक्षा कानूनों और नीतियों की समझ जैसे विषयों पर पहले दिन विषय विशेषज्ञों के साथ चर्चा होगी। कार्यशाला के दूसरे दिन युवाओं की भूमिका बदलाव के वाहक, पीड़ितों के लिए समर्थन प्रणाली को मज़बूत करना, वन स्टॉप सेंटर की भूमिका, तकनीक आधारित जेंडर हिंसा की समझ तथा विश्वविद्यालय स्तर पर महिला सुरक्षा उपाय जैसे विषयों पर चर्चा की जाएगी।

मंत्री सारंग ने वार्ड 69 पंजाबी बाग में विकास कार्यों का किया भूमि-पूजन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने शनिवार को नरेला विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत वार्ड 69 पंजाबी बाग में विभिन्न विकास कार्यों का भूमि-पूजन किया। इस अवसर पर मंत्री श्री सारंग ने कहा कि नरेला विधानसभा में नागरिकों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए निरंतर विकास कार्य किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि नरेला विधानसभा को हरित विधानसभा बनाने के लक्ष्य के साथ सभी 17 वार्डों में नागरिकों को थीम पार्कों की सौगात मिली है। स्वामी विवेकानंद थीम पार्क व मां नर्मदा परिक्रमा थीम पार्क नरेला क्षेत्र की स्वच्छता व सुंदरता का बेजोड़ उदाहरण है। नरेला विधानसभा अंतर्गत वार्ड 69 के रहवासियों द्वारा

मंत्री श्री सारंग का भव्य स्वागत किया गया। ढोल-नगाड़ों के साथ सैकड़ों की संख्या में रहवासियों एवं कार्यकर्ताओं ने पुष्पवर्षा की। रहवासियों के स्वागत से अभिभूत मंत्री श्री सारंग ने कहा कि जनता ने जो अपार स्नेह, आशीर्वाद व समर्थन दिया है वह एक ऋण की भांति है, इस ऋण को क्षेत्र के समग्र विकास के माध्यम से उतारा जाएगा। उन्होंने कहा कि नरेला विधानसभा विकास के मायने में कहीं से भी अछूती नहीं रहेगी। वार्ड 69 अंतर्गत पंजाबी बाग में पार्क के विकास कार्यों के अंतर्गत पाथवे, बाउंड्री वॉल, गेट निर्माण, हाईमास्ट लाइट, सार्वजनिक शौचालय, पौधारोपण, वेंचर्स, झूले और अन्य मनोरंजन की सुविधाओं का निर्माण किया जाएगा। यह पार्क सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए उपयोगी होगा और क्षेत्र में एक हरित और स्वच्छ वातावरण सुनिश्चित करेगा।

मंत्री तोमर ने उपनगर ग्वालियर में किया विकास कार्यों का भूमि-पूजन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने उपनगर ग्वालियर के वार्ड 11 में 77 लाख रुपए से अधिक के विकास कार्यों का भूमि पूजन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह विकास कार्य क्षेत्रवासियों को सुगम आवागमन और बेहतर सुविधा उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने वार्ड क्रमांक 11 के गोसपुरा नंबर 2 में मानमंदिर टॉकीज से खारा कुआं तक और गोसपुरा नंबर 1 पुरानी सब्ज़ी मंडी के पास हाज़िरा तक एवं डॉ. हरी वाली गली से कारीगरों की बगिया तक सीसी रोड निर्माण कार्य के लिए भूमि पूजन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आपके विश्वास और सहयोग से ही क्षेत्र का समग्र विकास संभव है।

साथ ही कहा कि उप नगर ग्वालियर में शिक्षा एवं स्वास्थ्य में अतुलनीय कार्य हुआ है। सिविल अस्पताल हजीरा बेहतर सुविधा उपलब्ध करा रहा है। भूमि-पूजन कार्यक्रम में पार्षद श्रीमती अनीता (गुड्डू) रत्नाकर, श्री अशोक शर्मा, राजा मान सिंह तोमर, श्री योगेंद्र तोमर, श्री मायाराम सिंह तोमर, श्री वेदप्रकाश शिवहरे, श्री शीतल अग्रवाल, श्री राम अवतार वैश्य, श्री पवन किरार सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

आरडीएसएस के कार्य निर्धारित समय में गुणवत्ता से पूर्ण हों-नीरज मंडलोई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अपर मुख्य सचिव ऊर्जा एवं विद्युत कंपनियों के अध्यक्ष श्री नीरज मंडलोई ने जबलपुर प्रवास के दौरान एमपी पॉवर मैनेजमेंट कंपनी, पॉवर जनरेटिंग कंपनी, पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी व पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के कार्यों की समीक्षा की। एसीएस श्री मंडलोई ने विद्युत की मांग व आपूर्ति की स्थिति, पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा रिवेम्पड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम में क्रियान्वित किए जा रहे कार्यों, ताप विद्युत उत्पादन और अति उच्च्दाब सब-स्टेशन व पारेषण लाइनों के लोड की जानकारी ले कर आवश्यक निर्देश दिए। बैठक में पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक श्री अनय द्विवेदी, पॉवर जनरेटिंग कंपनी के प्रबंध संचालक श्री मनजीत सिंह व पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी के प्रबंध संचालक श्री सुनील तिवारी, पूर्व क्षेत्र कंपनी की सीजीएम नीता राठौर, पॉवर मैनेजमेंट कंपनी के सीजीएम राजीव गुप्ता, पॉवर जनरेटिंग कंपनी के सीजीएम दीपक कश्यप सहित विद्युत कंपनियों के वरिष्ठ अभियंता उपस्थित थे।

एसीएस ऊर्जा श्री मंडलोई ने बैठक में प्रदेश में विद्युत की मांग व आपूर्ति स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने अगले पांच वर्षों में स्थापित होने वाले विद्युत परियोजनाओं और विद्युत उपलब्धता पर गहन चर्चा की। एसीएस श्री मंडलोई ने कहा कि आरडीएसएस के अंतर्गत निर्धारित समय में स्मार्ट मीटरों व केपेसिटर बैंक की स्थापना और वितरण हानियों को कम करने का कार्य त्वरित गति से किया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि आरडीएसएस के कार्यों की गुणवत्ता की सतत् मॉनीटरिंग की जाए। एसीएस श्री मंडलोई ने कहा कि पॉवर जनरेटिंग कंपनी के ताप व जल विद्युत गृह अपनी क्षमता का भरपूर उपयोग करते हुए बिजली उत्पादन करें। उन्होंने कहा कि रबी सीजन में विद्युत गृहों से सतत् व गुणवत्तापूर्ण विद्युत उत्पादन सुनिश्चित किया जाए।

प्रमुख सचिव और आयुक्त भी करें उपार्जन केन्द्रों का औचक निरीक्षण-खाद्य मंत्री राजपूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 के मिलिंग नीति की समीक्षा की। उन्होंने अफसरों को कड़े निर्देश दिये कि उपार्जन के दौरान या उसके बाद होने वाली गड़बड़ियों को रोकने के लिए विभाग के प्रमुख सचिव और आयुक्त उपार्जन केन्द्रों का औचक निरीक्षण करें। मंत्रालय में प्रस्तावित मिलिंग नीति की समीक्षा करते हुए खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि व्यवस्था में सुधार लाने के लिए अफसर कड़े निर्णय लेने से गुरेज न करें। व्यवस्था में सुधार लाने के लिए किसी भी स्तर पर लापरवाही या अनिमितता पाये जाने पर जिम्मेदारों के खिलाफ कठोर कार्यवाही करें। उपार्जन में गड़बड़ी रोकने के लिए उड़न दस्ता गठित करें। उड़नदस्ता औचक रूप से उपार्जन केंद्रों का निरीक्षण करेंगे। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि मैदानी स्तर पर जिला प्रबंधक नियमानुसार कार्य करने में कोई कोताही न बरतें। अफसरों को निर्देश दिये गये कि उपार्जन कार्य में संलग्न सर्वेयरों पर सतत् निगरानी रखें, जिससे वे उपार्जन के दौरान किसी प्रकार की लापरवाही न करें। उन्होंने व्यवस्था में सुधार लाने के लिए कुछ नई कार्य-योजना बनाने के भी निर्देश अधिकारियों को दिये। बैठक में प्रमुख सचिव खाद्य श्रीमती रश्मि अरूण शमी, आयुक्त खाद्य श्री सिबि चक्रवर्ती, एमडी नागरिक आपूर्ति निगम श्री पी.एन. यादव सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे। खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने निर्देश दिये कि भारतीय खाद्य निगम को उच्च गुणवत्ता का चावल प्रदान करने के लिए अनाज की सफाई मशीनों से कराई जाये। बैठक में निर्णय लिया गया कि इस कार्य को पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में मंडला से शुरूआत की जायेगी। इसे बाद में पूरे प्रदेश में लागू किया जायेगा, जिससे भारतीय खाद्य निगम को गुणवत्ता युक्त चावल दिया जा सके। प्रस्तावित नई मिलर्स नीति 2024-25 में पहली बार दंड का प्रावधान किया गया है। इसमें चावल की सूचना मिलर्स को प्राप्त होने के दिनांक से 20 दिवस में मानक स्तर का चावल जमा कराना अनिवार्य होगा। ऐसा न होने की स्थिति में मिलर्स पर 2 रूपये प्रति दिन प्रति क्विंटल का जुर्माना लगाया जाऐगा और एक माह में मानक स्तर का चावल जमा न कराये जाने पर मिलर्स द्वारा जमा की गई प्रतिभूति राशि राजसात कर ली जाऐगी। बैठक में निर्णय लिया गया कि मिलर्स द्वारा भारतीय खाद्य निगम को प्रदान किये जाने वाले चावल की मात्रा 60 प्रतिशत से कम प्रदान करने पर मिलर्स को प्रोत्साहन राशि नहीं दी जाऐगी।

स्कूल में पढ़ने वाली बालिकाओं को आत्म सुरक्षा के लिये दिया जा रहा है प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में शासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाली बालिकाओं में आत्म-विश्वास और सुरक्षा की भावना सशक्त करने के लिये स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा रानी लक्ष्मीबाई आत्म सुरक्षा प्रशिक्षण योजना चलाई जा रही है। योजना से प्रदेश में करीब एक लाख 50 हजार बालिकाओं को जूडो-कराटे का प्रशिक्षण दिलाया गया है। योजना में 15 हजार 245 शासकीय विद्यालयों की 80 हजार 466 बालिकाओं को प्रशिक्षण दिलाया गया।

इसी के साथ प्रदेश में संचालित 207 कस्तूरबा गांधी विद्यालय और 324 नेताजी सुभाष चन्द्र बोस बालिका छात्रावास में अध्ययनरत 70 हजार 450 बालिकाओं को जूडो-कराटे का प्रशिक्षण दिलाया गया। स्कूल शिक्षा विभाग ने कक्षा 1 से 8 की बालिकाओं के विद्यालयों के लिये प्रशिक्षण राशि भी जारी की है। स्कूल शिक्षा विभाग ने दृष्टि बाधित बच्चों की सुविधा को देखते हुए उनके पाठ्यक्रम की समस्त पुस्तकें ब्रेल लिपि में उपलब्ध करवाई हैं। ब्रेल लिपि पाठ्य पुस्तकों का मुद्रण शासकीय ब्रेल प्रेस भोपाल से कराया गया है। प्रदेश के शासकीय स्कूलों में पढने वाले दिव्यांग बच्चों का चिकित्सीय मूल्यांकन शिविरों के माध्यम से कराया गया।

पिछले वर्ष 30 जिलों के विकासखंडों पर आयोजित शिविर में 6 हजार 560 दिव्यांग बच्चों की पहचान कर उन्हें उनकी आवश्यकता के उपकरण वितरित किये गये। इसी के साथ दिव्यांग बच्चों के अभिभावकों को भी गृह आधारित शिक्षा एवं बच्चों की दैनिक गतिविधियों पर फेस-टू-फेस प्रशिक्षण जिला स्तर पर प्रदान किया गया है।

मध्यप्रदेश में खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना के लिए बेहतर माहौल -मंत्री कुशवाह

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उद्यानिकी एवं खाद्य प्र-संस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह शनिवार को नागपुर में एग्रोविजन राष्ट्रीय कृषि मेले में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश उद्यानिकी फसलों के उत्पादन में देश का अग्रणी राज्य है। मध्यप्रदेश में खाद्य प्र-संस्करण इकाइयों की स्थापना के लिए बेहतर माहौल है। उन्होंने कहा कि खाद्य प्र-संस्करण के क्षेत्र में काम करने वाली इकाइयों को केंद्र के साथ राज्य सरकार भी विशेष अनुदान मुहैया कराती है।

मंत्री श्री कुशवाह ने कृषि मेले में केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी से भेंट की और मेले के आयोजन को कृषकों के हित में बताया। उन्होंने कहा कि एग्रोविजन मेले में

स्टार्टअप्स एवं नवीन तकनीकियों, उन्नत खाद्य एवं बीज, कृषि उपकरणों के प्रदर्शन के साथ किसान भाईयों और उद्यमियों को नवीन इकाइयों की स्थापना के लिये शासन की योजनाओं की जानकारी दी जा रही है। इससे वे योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सकें। मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि इस तरह के मेले देश के अन्य राज्यों में भी आयोजित किया जाना चाहिए।

मंत्री श्री कुशवाह ने राष्ट्रीय कृषि मेले में शामिल हुई विभिन्न इकाइयों के प्रतिनिधियों से चर्चा कर, उन्हें मध्यप्रदेश आने का आमंत्रण दिया। श्री कुशवाह ने कहा कि मध्यप्रदेश में उद्यानिकी के क्षेत्र में प्रचुर संभावनाएं हैं। वर्ष 2023-24 में 4.30 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में उद्यानिकी फसलों की बोनी की गई, इसमें 96 लाख 11 हजार मीट्रिक टन से अधिक उद्यानिकी फसलों का उत्पादन हुआ है, जो रिकॉर्ड है।

उन्होंने बताया कि मध्यप्रदेश देश में संतरा, टमाटर, धनिया, लहसुन और मसाला फसलों के उत्पादन में प्रथम स्थान रखता है। राज्य सरकार खाद्य प्र-संस्करण के क्षेत्र में करने वाली इकाइयों को प्रोत्साहित कर रही है, मध्यप्रदेश में प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना के अंतर्गत 5 वर्षों में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की गई है। इस कारण भारत सरकार द्वारा प्रदेश में इस योजना की अवधि एक वर्ष और बढ़ा दी गई है अब यह योजना प्रदेश में मार्च 2025 तक प्रभावी रहेगी।

मध्यप्रदेश के विभिन्न उत्पादों के प्रति उत्साह

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला नई दिल्ली आम लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।मेले में लोगों को भारत और दुनिया भर के उत्पादों की प्रदर्शनी देखने को मिल रही है। पूर्व मंत्री श्रीमती इमरती देवी ने भी शनिवार को मध्यप्रदेश मण्डप का अवलोकन किया तथा एमएसएमई इकाईयों, स्व-सहायता समूहों और शिल्पियों से मिलकर उनके उत्पादों की प्रशंसा कर उत्साहवर्धन किया।

देश के सबसे लोकप्रिय व्यापारिक आयोजनों में से एक भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला कम्पनियों, प्रदर्शकों और पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है। नए अविष्कारों, शिल्प और वस्तुओं के बारे में जानने के लिए लोग काफी उत्सुक है। मेले की इस वर्ष की थीम

विकसित भारत 2047 है।

मेले में विभिन्न राज्यों, केन्द्र शासित प्रदेशों एवं भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों द्वारा भागीदारी की जा रही है। मध्यप्रदेश मण्डप में एमएसएमई इकाईयों, स्व-सहायता समूहों, स्टार्ट-अप एवं शिल्पियों द्वारा सक्रिय भागीदारी कर लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाया जा रहा है। मध्यप्रदेश मण्डप में होलोग्राफिक इमेजेस से मध्यप्रदेश राज्य में एक जनवरी-2025 से प्रारम्भ होने वाले विकास के 4 मिशन को दर्शाया गया है, जिसे आम लोगों के साथ कारपोरेट जगत के लोगों द्वारा भी पंसद किया जा रहा है। मध्यप्रदेश मंडप में भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन द्वारा भी उन्नत तकनीकी के उपयोग के सम्बंध में पूछताछ की गयी।

सीधी विधायक ने गोपालदास मंदिर के उन्नयन कार्य का किया भूमि पूजन

गोपालदास मंदिर का होगा कायाकल्प

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। विधायक सीधी रीती पाठक ने गोपालदास मंदिर में उन्नयन कार्य हेतु मुख्यमंत्री अधोसंरचना मद के माध्यम से स्वीकृत 150 लाख रूपये का भूमि पूजन किया और कहा कि आने वाले समय में गोपालदास मंदिर का स्वरूप भव्य और दिव्य के साथ सीधी के गौरव का एक पर्याय होगा। गोपालदास मंदिर बहुत ही प्राचीन मंदिर है जहाँ पर महान संत श्री गोपालदास जी महाराज ने अपनी साधना की थी, यहां की दिव्यता और भव्यता देखते बन रही है किन्तु आज आवश्यकता है कि इसका ऐसा कायाकल्प किया जाय जिससे यह एक देवालय के साथ-साथ भव्य पर्यटन का भी स्वरूप ले सके। उन्होंने कहा कि यह तो मेरा सौभाग्य है कि इस दिव्य मंदिर में सहयोग सेवा का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है, सीधी विधानसभा क्षेत्र की मैं वर्तमान विधायक हूं इस नाते मेरा यह कर्तव्य भी बनता है कि सीधी को एक अच्छा जिले के रूप में स्थापित कर सकूं क्योंकि सीधी एक जिला मुख्यालय है जहां दूर-दूर तक के लोग सीधी आते हैं और जब इस प्रकार के भव्यता और दिव्यता को देखेगें तो कही न कही उन्हे भी अच्छा महसूस होगा। सीधी विधायक ने कहा कि हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जिस प्रकार से देश के विकास की चिंता की है उसी प्रकार से हमारे प्रदेश के मुखिया डॉ मोहन यादव ने भी कहा कि आप विकास कार्य करो आपके विकास में कभी किसी प्रकार की बजट आड़े नही आयेगा। ऐसे नेतृत्व के लिये मैं धन्यवाद ज्ञापित करती हूं जो आज पूरे देश को आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिये सजग और संकल्पित किया है ये उनकी दृढ़ निश्चय ही है जो देश को पूरे विश्व में एक अलग पहचान दिला रहा है।

इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष मंजू सिंह, जनपद पंचायत अध्यक्ष धर्मेन्द्र सिंह परिहार, देव कुमार सिंह, के के तिवारी, देवेन्द्र सिंह मुन्नू, विश्वबंधु धर द्विवेदी, प्रमोद द्विवेदी, डॉ देवेन्द्र त्रिपाठी, पुनीत नारायण शुक्ला, सुधीर शुक्ला, संदीप द्विवेदी, पुष्पराज सिंह चौहान, मुनिराज विश्वकर्मा, सूर्य प्रताप सिंह, रोहित मिश्रा, आनंद परियानी, योगेंद्र सिंह, बाबू लाल कुशवाहा, पंकज पाण्डेय, सुनीता रानी वर्मा, विभा शर्मा, मनीला सिंह, राकेश मौर्य, अजीत वर्मा, अन्नू पाण्डेय, निशा सिंह, कंचन केसरी, विनोद सिंह, महेन्द्र वैस एवं गणमान्य जन उपस्थित रहे।

शहडोल मेडिकल कॉलेज को रिटायर्ड प्रिंसिपल का देहदान

बड़े बेटे ने कहा- पांच साल पहले ही पिता ने कर दिया था आवेदन

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल के रिटायर्ड प्रिंसिपल बेलाराम जगवानी का शरीर मृत्यु के बाद मेडिकल कॉलेज में पढ़ाई के लिए दान किया गया। शनिवार रात 80 वर्षीय बेलाराम जगवानी की मौत हो गई थी, उसके बाद परिजन रविवार दोपहर 4 बजे उनका शरीर लेकर मेडिकल कॉलेज पहुंचे। शहडोल में यह पहला मौका था, जब किसी ने मेडिकल कॉलेज के छात्रों की पढ़ाई के लिए देहदान किया। इससे पहले परिजनों ने अंतिम दर्शन और पूजा पाठ की। बड़े बेटे सुनील जगवानी ने बताया कि पिता ने पहले से ही देहदान का मन बना लिया था। जब शहडोल में मेडिकल कॉलेज नहीं था, तब उन्होंने रीवा मेडिकल कॉलेज में देहदान करने की इच्छा जताई थी। वहां संपर्क भी किया, लेकिन जैसे ही शहडोल में मेडिकल कॉलेज बना, वैसे ही उन्होंने 18 जुलाई 2019 को देहदान का आवेदन दिया था।

रिटायर्ड प्रिंसिपल खुद एमएससी के छात्र थे: बेलाराम जगवानी का जन्म पाकिस्तान के सिंध प्रांत के शहर लारकाना, जिला दादू में 2 मई 1944 को हुआ था। 1947 में विभाजन के बाद वह शहडोल आ गए। अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय के प्रथम बैच से एमएससी करने के बाद लेक्चरर के रूप में शहडोल के रघुराज हायर सेकंडरी स्कूल में सेवाएं दीं। इसके बाद जिले के अन्य स्कूलों में भी सेवाएं दीं। बाद में वे कन्या हायर सेकंडरी स्कूल पुरानी बस्ती से प्राचार्य होकर रिटायर हुए।

पिता मन के पक्के थे, हमें झुकना पड़ा: बेटे सुनील जगवानी ने बताया कि हमारे पिता मन के बहुत पक्के थे। जब वो शुरू में देहदान की बात करते थे तो हमारा पूरा परिवार पिता के फैसले के खिलाफ हो जाता था, लेकिन वे अपनी बातों पर अडिग रहे। पहले हमें उनके देहदान का निर्णय समझ नहीं आया था। बाद में उन्होंने पूरे परिवार को इसका महत्व समझाया। फिर हमने भी उनकी इच्छा का सम्मान किया।

शांतिवन में पूजन के बाद पहुंचे मेडिकल कॉलेज: छोटे बेटे किशोर जगवानी ने बताया कि पिता की अंतिम इच्छा पूरी करने के लिए हम सभी पहले उनके पार्थिव शरीर को लेकर शांति वन पहुंचे। वहां अंतिम संस्कार की सभी क्रियाओं को पूरा किया। इसके बाद उनका शरीर बच्चों की पढ़ाई के लिए दान किया है।

मेडिकल कॉलेज में पहला दान: मेडिकल कॉलेज के अधीक्षक डॉक्टर नागेंद्र सिंह ने कहा कि यह पहला मौका है, जब यहां के किसी स्थानीय नागरिक ने छात्रों की पढ़ाई के लिए देहदान किया है। अभी तक इंदौर, भोपाल समेत अन्य मेडिकल कॉलेज से बॉडी बच्चों की पढ़ाई के लिए मंगाई जाती थी।

सड़क पर महिलाओं में चले लात-घूंसे, बाल भी खींचे

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सिंगरौली में बीच सड़क पर दो महिलाओं के बीच जमकर लात-घूंसे चले। बातचीत करते-करते दोनों आपस में झगड़ने लगीं। वीडियो शनिवार का बताया जा रहा है। यह रविवार को सोशल मीडिया पर सामने आया। हालांकि मामले में थाने में कोई शिकायत नहीं की गई है। घटना बैढ़न के राजीव कॉम्प्लेक्स परिसर में स्थित चौपाटी की है।

यहां शनिवार को राजीव कॉम्प्लेक्स परिसर में दो महिलाएं आपस में बातचीत कर रही थीं। अचानक दोनों झगड़ा करने लगीं। दोनों ने एक-दूसरे के बाल खींचे। थप्पड़ भी मारे। यहां तक कि सड़क पर भी गिरा दिया। वीडियो में दिख रहा है कि एक शख्स बीच-बचाव करने की कोशिश कर रहा है। वहां मौजूद लोगों ने इसका वीडियो बना लिया। स्थानीय लोगों का कहना है कि महिलाएं कौन थीं, उनके बीच विवाद क्यों हुआ, इसका पता नहीं चल पाया है।

सिंगरौली में पिकनिक मनाने गई थीं पांच फैमिली

बच्ची को बचाने में नदी में डूबे डॉक्टर की मौत, 13 साल की लड़की लापता

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सिंगरौली में नॉर्दर्न कोल फील्ड लिमिटेड (एनसीएल) के डॉक्टर की नदी में डूबने से मौत हो गई। वह नदी में डूब रही 13 साल की बच्ची को बचाने उतरे थे। इसी दौरान गहरे पानी में चले गए। डॉक्टर का शव बरामद कर लिया है। वहीं एसडीईआरएफ की टीम बच्ची की तलाश में जुटी है।

घटना रविवार दोपहर में लंघाडोल थाना क्षेत्र में गोपद नदी की है। डॉ. हरीश सिंह (37) केंद्र सरकार की कंपनी एनसीएल में स्थित जयंत अस्पताल में डॉक्टर हैं। वह रविवार को परिवार समेत दो डॉक्टर और दो विजिलेंस अफसरों की फैमिली के साथ देउरदह घाट मंदिर पर पिकनिक मनाने पहुंचे थे।

पिकनिक मनाने डॉ. प्रवीण मुंडा, डॉ. हरीश सिंह पिता योगेन्द्र सिंह, डॉ. डीजे बोरा पिता दिलीप बोरा, सुनील कुमार पिता सुभाष कुमार (विजिलेंस ऑफिसर) और पीके भंडारी उर्फ प्रवीण कुमार (विजिलेंस ऑफिसर) की फैमिली आई हुई थी।

बच्ची को बचाने उतरे, खुद डूबने लगे: नदी में पांच से सात बच्चे नहाने उतरे थे। इसी दौरान प्रेरणा मुंडा (13) पिता रिटायर्ड डॉ. प्रवीण मुंडा (63) लापता हो गई। बच्चों ने यह बात परिजनों को बताई। इसके बाद डॉ. प्रवीण मुंडा, डॉ. हरीश सिंह, डॉ. डीजे बोरा, सुनील कुमार और पीके भंडारी पानी में कूद गए। पानी का बहाव तेज होने के कारण पांचों डूबने लगे। डॉ. हरीश सिंह गहरे पानी में चले गए, जबकि चारों लोग जैसे-तैसे खुद ही बाहर आ गए। गोताखोरों की मदद से डॉ. हरीश को निकाला गया। उन्हें सरई उपस्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां मृत घोषित कर दिया। इस दौरान सूचना पर पुलिस भी मौके पर पहुंच गई।

रात में ही रेस्क्यू अभियान चला रही एसडीईआरएफ: बैढ़न से 14 सदस्यीय एसडीईआरएफ की टीम भी घटनास्थल पहुंच गई है। टीम ने तलाशी अभियान भी शुरू कर दिया है। पुलिस का कहना है कि पहले रात में ही हाइड्रोजन लगवाकर बच्ची को तलाश करने की कोशिश की जा रही है। इसके अलावा, घटनास्थल से करीब 30 किलोमीटर दूर जेपी पावर प्लांट का स्टॉप डैम को जाली लगाकर रोकने का प्रयास किया जाएगा, जिससे शव बह न सके।

बाबा बागेश्वर की पदयात्रा शामिल होंगे पन्ना के विधायक

मीडिया ऑडीटर, पन्ना (निप्र)। पन्ना समेम विश्व में सनातन की अलख जगाने और हिंदू एकता को लेकर बागेश्वर धाम के महाराज धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री इन दिनों सनातन एकता पदयात्रा निकाल रहे हैं। जिसका समापन ओरछा में 29 नवंबर को श्री राम राजा सरकार के दरबार में होगा। जिसमें पन्ना जिले की गुनोर विधानसभा से भाजपा विधायक राजेश वर्मा 111 गाड़ियों से श्रद्धालुओं के साथ शामिल होने पहुंचेंगे। दरअसल विधायक राजेश वर्मा ने बताया कि बाबा बागेश्वर धाम के शास्त्री धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री हिन्दू एकता की अलख जगा रहे हैं। जिसको लेकर वह बागेश्वर धाम से ओरछा तक पदयात्रा निकाल रहे हैं। इस पवित्र अवसर पर पन्ना जिले से भी श्रद्धालु शामिल होंगे। 111 गाड़ियों से श्रद्धालु ओरछा पहुंचेंगे। उन्होंने रविवार को पदयात्रा में पहुंचकर महाराज से इस विषय पर चर्चा भी की है। इस दौरान उनके साथ भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य सतानंद गौतम भी साथ रहे। यात्रा के दौरान चर्चा के बाद विधायक डॉ. राजेश वर्मा ने संकल्प लिया कि समापन अवसर पर 111 वाहनों के साथ श्रद्धालुओं को लेकर शामिल होंगे।

पंचायत सचिव संगठन ने सौंपा ज्ञापन

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। पंचायत सचिवों के साथ हो रहे अमानवीय व्यवहार से प्रदेश का सचिव संगठन बेहद आक्रोश में है इसी सिलसिले में जिला मैहर पंचायत सचिव संगठन के जिला अध्यक्ष सुभाष सोनी के नेतृत्व में शनिवार को जिला पंचायत सीईओ को ज्ञापन सौपा गया है। बताया गया कि बालाघाट जिले के किरनामपुर जनपद के ग्राम पंचायत कांदी कला के सचिव के साथ घटित घटना के विरोध में 3 दिन का अवकाश घोषित किया जाए इसके अलावा जिस तरह से पंचायत सचिवों को परेशान किया जा रहा है उससे निपटने के लिए आगामी दिनों में प्रदेश स्तर पर धरना प्रदर्शन किया जाएगा लेकिन हाल ही में बालाघाट में जिस तरह से पंचायत सचिव घनश्याम बिसेन असमय काल के गाल में समा गया उसकी पुनरावृत्ति ना हो उसके लिए जिला मैहर के समस्त सचिव तीन दिन 25-11-24 से 27-11-24 तक अवकाश में रहेंगे ।ज्ञापन सौंपने में जिले के सभी पंचायत सचिव उपस्थित रहे।

खेत जोतने को लेकर मारपीट, 3 लोग घायल

जिले के बघोर गांव में दो लोगों ने किया हमला

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिले के बघोर गांव में खेत जोतने को लेकर दो लोगों ने मिलकर तीन लोगों के ऊपर हमला कर दिया। इसकी वजह से एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल है, वहीं दो व्यक्तियों को मामूली चोट आई है। रविवार शाम 4 बजे दो लोगों ने मिलकर जाहिद अहमद और दो अन्य पर हमला कर दिया। घटना में तीन लोगों को चोट आई हैं।

जाहिद अहमद ने बताया कि वह अपने खेत में रोजमर्रा के काम में व्यस्त थे, तभी दो व्यक्तियों ने अचानक उन पर हमला कर दिया। जब बीच बचाव के लिए तस्कीन अहमद और रुबीना अहमद आए तो पीछे से दो लोगों ने मिलकर उनके ऊपर लाठी और डंडों से हमला कर दिया। दोनों को मामूली चोट आई है। घटना की शिकायत तुरंत सिहावल चौकी में दर्ज कराई गई।

चौकी प्रभारी सिहावल सब इंस्पेक्टर दिव्य प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि लाल मोहम्मद और अमीरुद्दीन ने जमीनी विवाद में मारपीट की है।

सीधी में टी-17 ने मदमस्त चाल से रोका पर्यटकों का रास्ता

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिले के संजय टाइगर रिजर्व क्षेत्र में इन दिनों बाघों का जलवा देखने को मिल रहा है। ऐसे में रविवार से सुबह एक वीडियो सोशल मीडिया में तेजी से सुर्खियां बटोर रहा है। यह वीडियो दो दिन पहले का बताया गया है। जहां पर्यटक अपनी गाड़ी में बैठे हुए थे। तभी इस समय बाघ टी-17 आ जाता है और वह उनका रास्ता रोक लेता है।

बीच सड़क पर चल रहा था टी-17: वायरल वीडियो के बारे में बताया गया है कि बीच सड़क पर बाघ टी-17 चल रहा था। जहां पर्यटक उसके आगे और पीछे थे। हालांकि यह वीडियो 9 सेकेंड का है। लेकिन 9 सेकेंड में ही वह मनमोहक तस्वीर सामने लेकर आया है। इसके अलावा बाघ अपनी आवाज से दहाड़ भी रहा था, जिसकी वजह से पर्यटक भी डर रहे थे।

बहुत कम दिखता है टी-17 : बाघ टी-17 के बारे में सीसीएफ अमित दुबे ने बताया कि यह बाग काफी दिनों से जंगल के बीचो-बीच रह रहा था। जो अभी लोगों को दिखाई दिया है। हालांकि इसका वीडियो कम वायरल होता है। यह बेहद ही शानदार पल था, जो पर्यटकों ने अपना फीडबैक दिया।

अनूपपुर के वेंकटनगर में घुसा भालू, रहवासियों में दहशत

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर जिले के वेंकटनगर में रविवार शाम भालू देखा गए हैं। भालू छत्तीसगढ़ की सीमा में विचरण करता है। शाम होते ही भालू अनूपपुर जिले के वेंकटनगर क्षेत्र में तीन दिनों से विचरण कर रहा है। इसकी सूचना ग्रामीणों ने वन विभाग को दी। भालू के विचरण की सूचना पर वनविभाग आम नागरिकों को सतर्कता बरतने की समझाइश दी है। तीन दिनों से एक भालू वेंकटनगर गांव के आसपास आकर विचरण कर रहा है, जो वेंकटनगर रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म में विचरण करते रेलवे कर्मचारी और नागरिकों ने देखा। इसका वीडियो भी वायरल हो रहा है। अभी भालू पड़ोस के बोरातालाब के पास तथा पुलिस सहायता केंद्र के पीछे से विचरण करते हुए देखा गया है। भालू के विचरण की जानकारी देते हुए वेंकटनगर निवासी आशीष तिवारी ने वन विभाग को सूचना दी। जिस पर वन विभाग के कर्मचारी भालू के विचरण पर नजर बनाए हैं।

विचार

कंपनियों पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए

देश के कानून का उल्लंघन करने वाली कंपनी को अवश्य ही दंडित किया जाना चाहिए। बहरहाल, ऐसे कदम उठाते समय जांच एजेंसियों को यह अवश्य सुनिश्चित करना चाहिए कि वे ना सिर्फ निष्पक्ष रहें, बल्कि निष्पक्ष दिखें भी।ई-कॉमर्स क्षेत्र की फ्लिपकार्ट और अमेजन जैसी कंपनियों ने भारतीय कानून को तोड़ा हो, तो बेशक उन पर प्रावधान के अनुरूप सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। ये दोनों अमेरिकी स्वामित्व वाली कंपनियां हैं (फ्लिपकार्ट में लगभग तीन चौथाई हिस्सा वॉलमार्ट का है)। भारत के ई-कॉमर्स बाजार का सबसे बड़ा हिस्सा उनके पास ही है। एक अनुमान के मुताबिक 70 बिलियन डॉलर के इस बाजार में फ्लिपकार्ट का हिस्सा 32 और अमेजन का 24 फीसदी है। खबर है कि प्रवर्तन निदेशालय ने इनके विक्रताओं पर छापा मारा। उसके बाद इन कंपनियों के अधिकारियों को पूछताछ के लिए बुलाया गया है। आरोप है कि इन कंपनियों ने विदेशी निवेश संबंधी कानून का उल्लंघन किया। इस कानून के तहत विदेशी ई-कॉमर्स कंपनियां विक्रेताओं के बीच भेदभाव नहीं कर सकतीं। साथ ही ये विक्रेताओं से सामान खरीद कर अपना भंडार नहीं बना सकतीं। अमेजन और फ्लिपकार्ट का कहना है कि उन्होंने किसी कानून का उल्लंघन नहीं किया। मगर ईडी का दावा है कि उसके पास इन कंपनियों के खिलाफ ठोस सबूत हैं। निर्विवाद है कि हर कंपनी- चाहे वो देशी हो या विदेशी- उसे सख्ती से देश के कानून का पालन करना चाहिए। कोई कंपनी ऐसा नहीं करती, तो उसे अवश्य ही दंडित किया जाना चाहिए। बहरहाल, जांच एजेंसियों को ऐसे कदम उठाते समय यह अवश्य सुनिश्चित करना चाहिए कि वे ना सिर्फ निष्पक्ष हों, बल्कि निष्पक्ष दिखें भी। इस संदर्भ में यह बात इसलिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि गुजरे वर्षों में ऐसी धारणा (जो संभव है कि निराधार हो) बनी है कि भारत सरकार के कुछ पसंदीदा उद्योग घराने हैं और जब उनके हित किसी विदेशी (या देशी) कंपनी से टकराते हैं, तो जांच एजेंसियां अति सक्रिय हो जाती हैं। अतीत में वर्तमान सरकार से ही जुड़े रहे कुछ अर्थशास्त्रियों ने इस धारणा को भारत में विदेशी निवेश के रास्ते में मौजूदा रुकावटों में एक बताया है। यह समय अंतरराष्ट्रीय कारोबार के लिए प्रतिकूल है। इस वर्ष भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में भारी गिरावट आई है। इस हाल में उपरोक्त धारणा को तोडऩा अत्यधिक आवश्यक हो गया है। आशा है, ईडी इस अपेक्षा के प्रति जागरूक होगी।

सहकारिता की भूमिका बेहद महत्त्वपूर्ण

नितिन प्रधान

गरीब कल्याण और समाज के निचले तबके के लिए समृद्धि का रास्ता खोलने में सहकारिता की भूमिका बेहद महा्वपूर्ण है। डेयरी, खाद और बैंकिंग जैसे क्षेत्रों में सहकारिता की सफलता के बाद अब बारी अन्य क्षेत्रों की है। सहकारिता के महा्व को समझते हुए सरकार ने इसके लिए अलग से मंत्रालय का गठन भी किया है। बीते तीन वर्ष में सहकारिता क्षेत्र में कई महा्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले हैं। संभवत: यही वजह है कि अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (आईसीए) को वैश्विक सहकारी समेलन कराने के लिए इस वर्ष भारत आना पड़ा। सहकारिता के बढ़ते महा्व को संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी स्वीकारा है, और 2025 को अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की है।

नई दिल्ली में 25 नवम्बर से होने वाला वैश्विक सहकारी सम्मेलन-2024 दुनिया भर के सहकारिता क्षेत्र में भारत की स्थिति को और मजबूत करेगा। आईसीए की स्थापना (1895) के 130 वर्षों के इतिहास में पहली बार यह आयोजन भारत में होने जा रहा है। भारत आईसीए का संस्थापक सदस्य है। आईसीए सहकारी समितियों का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष वैश्विक संस्था है, जिसकी संख्या दुनिया भर में 30 लाख से ज्यादा है। विश्व में 107 देशों के 310 से अधिक संगठन अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन के सदस्य हैं।

इस सम्मेलन की मेजबानी की बागडोर विश्व की अग्रणी सहकारी संस्था इफको समेत देश की 17 प्रमुख सहकारी संस्थाओं के हाथों में है। महत्त्वपूर्ण यह भी है कि यह सम्मेलन सहकार से समृद्धि के भारत के संकल्प को पूरी दुनिया में ले जाएगा। आईसीए ने भी इस सम्मेलन का थीम %सहकारिताएं-सबकी समृद्धि का द्वार' तय किया है। इस सम्मेलन में भारतीय गांवों की थीम पर बने %हाट' में भारतीय सहकारी उत्पादों और सेवाओं का प्रदर्शन किया जा रहा है। बहुत संभव है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस सम्मेलन के दौरान 2025 को अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के रूप में मनाए जाने की औपचारिक घोषणा और इस विषय पर एक स्मारक डाक टिकट भी जारी करें।

मोदी सरकार ने सहकारिता क्षेत्र में पिछले तीन वर्ष में दर्जनों महत्त्वपूर्ण बदलाव कर इसे नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया है। सहकारी आंदोलन को गति प्रदान करने के लिए नये मंत्रालय का भी गठन किया गया। सहकारी क्षेत्र के संस्थानों के पुनर्गठन और निष्क्रिय हो चुकीं प्राथमिक सोसाइटियों को पुनर्जीवित किया गया है। मॉडल बायलॉज से प्राथमिक कृषि ऋण सोसाइटी (पैक्स) को ताकत दी गई और उनके कामकाज के दायरे को बढ़ाया गया। सहकारिता पर लागू टैक्स को तर्क संगत बनाया गया।

दुनिया में लगभग 30 लाख सहकारी समितियां हैं, जिनमें से करीब 8 लाख सहकारी समितियां यानी एक चौथाई से अधिक समितियां भारत में हैं। संयुक्त राष्ट्र के लगभग सभी सदस्य देशों के एक अरब से अधिक लोग इन समितियों के सदस्य हैं, जिनमें से 29 करोड़ से ज्यादा सदस्य भारत के हैं। सहकारिता क्षेत्र ने दुनिया भर में 21 करोड़ से ज्यादा लोगों को रोजगार दिया है।

सहकारी समितियों की संख्या और उनके विस्तार की संभावनाओं के मामले में भारत का इतिहास गौरवशाली रहा है। भारतीय सहकारी प्रणाली में सबसे बड़ा परिवर्तन पैक्स के मॉडल बायलॉज का कार्यान्वयन है। सहकारिता क्षेत्र में तीन नई राष्ट्रीय बहुराज्यीय सहकारी समितियों- राष्ट्रीय सहकारी जैविक लिमिटेड (एनसीओएल), राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (एनसीईएल) और भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड (बीबीएसएसएल) के गठन ने भारत को वैश्विक सहकारिता आंदोलन में अग्रणी बना दिया है। इन पहल ने दूसरे देशों का ध्यान खींचा है।

अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के दौरान जहां संयुक्त राष्ट्र के निर्धारित लक्ष्य को सहकारिता के माध्यम से पूरा करने की रूपरेखा तैयार की जाएगी, वहीं सहकारिता के वैश्विक सम्मेलन में इन सभी लक्ष्यों पर व्यापक चर्चा भी कराई जाएगी। लोगों के जीवन स्तर में सुधार के साथ ही वैश्विक चिंताओं को दूर करने को लेकर तैयार बिंदुओं पर भी गंभीर विचार-विमर्श किया जाएगा। संयुक्त राष्ट्र ने 17 सतत विकास लक्ष्य चिन्हित किए हैं, जिन्हें पूरा करने के लिए सहकारी समितियों की सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी। इनमें पारिस्थितिकी संतुलन, स्थिर आजीविका, गरीबी उन्मूलन, सामुदायिक विकास एवं सहयोग, मिट्टी की सेहत एवं जीवन, महिला सशक्तिकरण सहित प्राकृतिक संसाधनों पर सभी का समान अधिकार आदि विषयों को शामिल किया गया है। सहकारिता वर्ष मनाए जाने का प्रमुख उद्देश्य इन्हीं लक्ष्यों को पूरा करना है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए 2030 तक की समयावधि निर्धारित की गई है। इसमें सहकारी क्षेत्र की भूमिका पहले ही निर्धारित कर दी गई है, जिससे सम्मेलन का महत्त्व और भी बढ़ गया है।

देश के लिए चुनौती बने सड़क हादसे

अमित बैजनाथ गर्ग

यूं तो अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने वाली सड़कें देश के विकास में अहम भूमिका निभा रही हैं, लेकिन आए दिन होने वाले सड़क हादसे कई सवालिया निशान भी खड़े कर रहे हैं।

सड़क हादसे भारत जैसे विकासशील देश के लिए चुनौती बने हुए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने पिछले साल वैश्विक सड़क सुरक्षा सप्ताह के दौरान एक रिपोर्ट प्रस्तुत की थी, जिसके अनुसार वैश्विक स्तर पर सड़क दुर्घटनाओं में प्रति वर्ष 1.35 मिलियन से अधिक मौतें होती हैं, और 50 मिलियन से अधिक लोगों को गंभीर शारीरिक चोटें आती हैं। रिपोर्ट के अनुसार, विश्व में सड़क दुर्घटनाओं के कारण होने वाली कुल मौतों में से 11 प्रतिशत भारत में होती हैं।

सड़क दुर्घटनाओं के कारण भारत को होने वाले नुकसान को लेकर विश्व बैंक के आकलन के अनुसार, 18-45 आयु वर्ग के लोगों की सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मृत्यु दर सर्वाधिक 69 प्रतिशत है। इसके अलावा 54 प्रतिशत मौतें और गंभीर चोटें मुख्य रूप से संवेदनशील वगरे जैसे पैदल यात्री, साइकिल चालक और दोपहिया वाहन सवार आदि में देखी जाती हैं। भारत में 5-29 वर्ष आयु-वर्ग के बच्चों और युवा वयस्कों में सड़क दुर्घटना मृत्यु का सबसे बड़ा कारण है। विश्व सड़क सांख्यिकी के अनुसार, 2018 में सड़क दुर्घटना से होने वाली मौतों की संख्या में भारत दुनिया में पहले स्थान पर था। इसके बाद चीन और अमेरिका का नंबर आता है।

केंद्र सरकार के आंकड़ों के मुताबिक, देश भर में होने वाली कुल सड़क दुर्घटनाओं में से 76 प्रतिशत दुर्घटनाएं ओवरस्पीडिंग और गलत साइड पर गाड़ी चलाने जैसे यातायात नियमों के उल्लंघन के कारण होती हैं। कुल सड़क दुर्घटनाओं में दोपहिया वाहनों और पैदल चलने वालों की हिस्सेदारी सबसे अधिक है। विशेषज्ञों का कहना है कि इसके बावजूद सड़क यातायात इंजीनियरिंग और नियोजन के दौरान इस विषय पर ध्यान नहीं दिया जाता। यातायात इंजीनियरिंग और नियोजन सड़कों को विस्तृत करने तक ही सीमित है, जिसके कारण कई बार सड़कों और राजमागरे पर ब्लैक स्पॉट बन जाते हैं। ब्लैक स्पॉट वे स्थान होते हैं, जहां सड़क दुर्घटना की आशंका सबसे अधिक रहती है। सड़क दुर्घटनाओं के कारण होने वाली 80 प्रतिशत मौतों के लिए वाहन चालक प्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार होते हैं। यह तथ्य देश में अच्छे ड्राइविंग स्कूलों की कमी की ओर भी इशारा करता है। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की %भारत में सड़क दुर्घटनाएं' शीर्षक वाली रिपोर्ट कहती है कि वर्ष 2022 में सड़क दुर्घटना में लगभग 68 प्रतिशत मौतें ग्रामीण क्षेत्रों में हुई, जबकि कुल दुर्घटना मौतों में शहरी क्षेत्रों का योगदान 32 फीसद रहा। दुर्घटनाओं और मृत्यु दर, दोनों में दोपहिया वाहनों की हिस्सेदारी सर्वाधिक रही।

यूं तो सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए केंद्र सरकार अपने स्तर पर काफी प्रयास कर रही है, लेकिन अपेक्षित परिणाम नहीं मिल पा रहे हैं। सड़क सुरक्षा के बारे में प्रभावी जन जागरु कता बढ़ाने के लिए सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की ओर से मीडिया के सभी माध्यमों द्वारा विभिन्न प्रचार उपाय एवं जागरु कता अभियान चलाए जा रहे हैं।

महाराष्ट्र-झारखंड में सियासी सूझबूझ मस्त, अहंकार पस्त

कमलेश पांडे

महाराष्ट्र और झारखंड विधानसभा चुनावों के साथ-साथ लोकसभा की दो सीटों और विभिन्न दर्जनाधिक राज्यों की 48 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव के परिणाम चौंकाने वाले हैं। ये चुनाव परिणाम इस बात का स्पष्ट इशारा कर रहे हैं कि मतदाताओं ने जहां सियासी सूझबूझ को ग्रेस देते हुए मस्त कर दिया है, वहीं राजनैतिक अहंकार को पूरी तरह से पस्त करके जमीन पर ला दिया है। मतलब यह कि पारस्परिक सिरफुटौव्वल को सिरे से खारिज कर दिया है।

दो टूक शब्दों में कहें तो मतदाताओं ने जहां महाराष्ट्र के भाजपा नेता व उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को सहयोगियों सहित और झारखंड के जेएमएम नेता व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को साथियों सहित अपनी-अपनी सियासत को नए सिरे से आगे बढ़ाने का मौका दिया है। वहीं, कांग्रेस नेता राहुल गांधी, एनसीपी शरद पवार के नेता शरद पवार/सुप्रिया सुले, शिवसेना यूटीबी के नेता उद्धव भाऊ ठाकरे, समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव, राजद नेता तेजस्वी यादव आदि को जोर का झटका धीरे से दिया है, क्योंकि इनके बीच समुचित सामंजस्य के अभाव को मतदाताओं ने समय रहते ही भांप लिया और इनकी उम्मीदों के विपरीत परिणाम दिया।

हालांकि तृणमूल कांग्रेस नेत्री व पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की लाज जनता ने बचा ली है। वहीं, पंजाब में आप-कांग्रेस की टक्कर एकबार फिर सामने आई है, जो आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव में भी दिखाई देगी। वहीं, कांग्रेस नेत्री और वायनाड, केरल के लोकसभा उपचुनाव की प्रत्याशी प्रियंका गांधी को जीत देकर उनका राजनीतिक मार्ग प्रशस्त कर दिया है। जबकि महाराष्ट्र के नांदेड़ लोकसभा उपचुनाव में कांग्रेस की शिकस्त और बीजेपी को बढ़त मिली है।

खास बात यह है कि महाराष्ट्र के शिवसेना नेता और मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे तथा एनसीपी नेता व उपमुख्यमंत्री अजित पवार भी अपने-अपने दल को तोड़ने के बावजूद अपनी-अपनी पार्टी की विरासत पर पूरी तरह से कब्जा जमा लिया है। उनके इस मिशन को पूरा करने में भाजपा नेता व उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के चमत्कारिक नेतृत्व के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। कुल मिलाकर एक ओर महाराष्ट्र में भाजपा के नेतृत्व वाले महायुति (गठबंधन) को प्रचंड जीत मिली है, वहीं दूसरी ओर झारखंड में जेएमएम के नेतृत्व वाले इंडिया गठबंधन ने स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने में सफलता हासिल कर ली है। अब इनका मुख्यमंत्री कौन होगा और उनका मंत्रिमंडल कैसा होगा, इसको लेकर माथापच्ची शुरू हो चुकी है।

वहीं, महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में कांग्रेस, एनसीपी शरद पवार और शिवसेना यूटीबी के महाविकास अगाड़ी के अलावा यूपी विधानसभा उपचुनाव में समाजवादी पार्टी और बिहार विधानसभा उपचुनाव में राष्ट्रीय जनता दल के निराशाजनक प्रदर्शन से इनकी आंतरिक रस्साकशी का भी भंडाफोड़ हो चुका है। इससे इनके लोकसभा चुनावों के संयुक्त प्रदर्शन पर भी पानी फिर गया है। इससे सेक्यूलर मतदाताओं में भी गहरी निराशा छा गई है। हालांकि, झारखंड में कांग्रेस और राजद को मिली जीत से पार्टी के

नेतृत्व को थोड़ी राहत मिली है।

वहीं, एनडीए की जोरदार सफलता से विकास, हिंदुत्व व राष्ट्रवाद की भावना एक बार फिर उफान पर है, क्योंकि यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के %बटेंगे तो कटेंगे% के नारे और पीएम नरेंद्र मोदी के %एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे% के नारों का असर महाराष्ट्र से लेकर यूपी-बिहार तक दिखाई पड़ा है। राजस्थान, मध्यप्रदेश से लेकर असम तक इसका असर पड़ा है। लेकिन झारखंड में यह नारा कैसे मिस्फायर कर गया, यह शोध का विषय है। वहीं, बंगलादेशियों/रोहिंग्या मुसलमानों का मुद्दा भी यहां फेल हो गया, क्योंकि इनलोगों ने गोलबंद होकर इंडिया गठबंधन को पोल कर दिया। वहीं, लाडली बहना योजना की सफलता ने महाराष्ट्र की महायुति सरकार को फिर से वहां लौटने का मौका दिया है। वहीं, केरल और कर्नाटक में कांग्रेस की सियासी इज्जत बच गई है।

बता दें कि लगभग एक दर्जन से अधिक राज्यों की 48 विधानसभा सीटों सहित लोकसभा की 2 सीटों पर हुए उपचुनाव के नतीजे और इनके रुझानों से उपर्युक्त आशय के संकेत मिले हैं। इन 48 सीटों में से यूपी की 9 सीटों पर देशभर की निगाहें लगी हुई हैं, जहां बीजेपी नेता व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 7 सीट जीतकर एकबार फिर अपना जलवा दिखा दिया है, जबकि सपा को मात्र 2 सीटों पर संतोष करना पड़ा, जिससे उसके पीडीए का दम्भ चकनाचूर हो गया। उधर, बिहार में राजद विस उपचुनाव वाली चारों सीटों पर पिछड़ती चली गई, जिससे तेजस्वी यादव के नेतृत्व पर अब सवाल उठने लगा है।

इसके अलावा वायनाड सीट के रिजल्ट को लेकर भी काफी उत्सुकता है, जहां से प्रियंका गांधी वाड्रा ने जीत हासिल की है। साथ ही राजस्थान में 7, पश्चिम बंगाल में 6, असम में 5, पंजाब और बिहार में 4-4 सीटों पर हुए उपचुनाव के नतीजे से जहां सत्ताधारी गठबंधन सब पर भारी पड़ता दिखाई दे रहा है। वहीं, कर्नाटक और केरल में 3-3 सीटों पर हुए उपचुनाव में कांग्रेस गठबंधन की लाज बच गई है। इनके अलावा उत्तराखंड की केदारनाथ सीट पर नजरें टिकी हैं, जहां भाजपा प्रत्याशी ने जीत हासिल की है। इससे साफ है कि महाराष्ट्र-झारखंड में सियासी सूझबूझ मस्त साबित हुआ, जबकि अहंकार पस्त हो गया।

बलरामपुर में हाईवा से बचने फॉलो गाड़ी ने लगाया ब्रेक

मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े सड़क हादसे का शिकार, काफिले की चार गाड़ियां आपस में टकराई

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ की महिला एवं बाल विकासमंत्री लक्ष्मी राजवाड़े सड़क हादसे का शिकार हो गई। रविवार को बलरामपुर जिले के राजपुर में हादसा हुआ। दरअसल, ह्वा-343 पर हाईवा से बचने फॉलो वाहन के चालक ने ब्रेक लगाया था इस दौरान काफिले की 4 गाड़ियां आपस में टकरा गई।

हादसे में मंत्री राजवाड़े की कार भी काफिले की ही एक कार से टकरा गई। हालांकि मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े पूरी तरह सुरक्षित हैं। वह दूसरे वाहन से रवाना भी हो गईं। 2 दिन पहले ही मंत्री रामविचार नेताम भी सड़क हादसे में घायल हुए थे। उनका इलाज रायपुर के अस्पताल में चल रहा है।

मैच के समापन समारोह में शामिल होने जा रहीं थीं: जानकारी के मुताबिक, रविवार को कुसमी में आयोजित फुटबाल मैच के समापन समारोह में शामिल होने लक्ष्मी राजवाड़े जा रहीं थीं। अंबिकापुर से मंत्री के वाहनों का काफिला करीब 3 बजे राजपुर के पास पहुंचा। काफिले के एक वाहन चालक ने हाइवा से बचने के लिए ब्रेक लगाया।

मंत्री ने कहा- सभी सुरक्षित: हादसे के बाद मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि हम सब सुरक्षित हैं। छोटा सा हादसा हुआ। जब घटना हुई, मुझे झपकी आ गई थी। ईश्वर की कृपा से किसी को चोट नहीं आई है। वहीं,

चालक ने बताया कि, हाइवा वाहन चालक की लापरवाही की वजह से हादसा हुआ। काफिले के एक वाहन की स्पीड कम होने पर पीछे से तेज रफ्तार में आ रही काफिले की चार वाहन आपस में टकरा गए।

राजपुर अस्पताल में जांच के बाद हुई रवाना: हादसे के बाद मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े को राजपुर के अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों ने लक्ष्मी राजवाड़े की जांच की। इसके बाद दूसरे वाहन से कुसमी के लिए रवाना हो गईं। लक्ष्मी राजवाड़े बलरामपुर जिले की प्रभारी मंत्री भी हैं। राजपुर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

2 दिन पहले ही हुआ है मंत्री राम विचार नेताम का एक्सीडेंट: छत्तीसगढ़ सरकार के कृषि मंत्री रामविचार नेताम शुक्रवार को सड़क हादसे में घायल हो गए। वे कवर्धा-बेमेतरा के रास्ते से रायपुर लौट रहे थे। तभी हाईवे में उनकी कार पिकअप से टकरा गई। मंत्री की गाड़ी बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई है उनके सिर पर चोट आई है और बाएं हाथ में फ्रैक्चर है। हादसा रायपुर-बेमेतरा मार्ग पर जेवरा गांव के पास हुआ। गंभीर हालत में मंत्री राम विचार नेताम को रायपुर लाया गया है। उन्हें पचपेड़ी नाका स्थित एक प्राइवेट अस्पताल में भर्ती किया गया है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय समेत कई मंत्रियों ने अस्पताल पहुंचकर उनका हाल जाना।

सीबीआईने 2 अफसरों को रिश्वत लेते पकड़ा

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बलौदाबाजार में सीबीआई ने डाक विभाग के ओवरसियर और सब डिवीजनल इंस्पेक्टर को शनिवार को 37 हजार रुपए की रिश्वत लेते गिरफ्तार किया है। दोनों ने अपने ही विभाग के एक कर्मचारी से मामला निपटाने के एवज में रुपए की डिमांड की थी। मामला पलारी डाक घर का है।

सीबीआई के अनुसार, बलौदाबाजार सब डिवीजन कार्यालय के ओवरसियर राजेश पटेल और सब डिवीजनल इंस्पेक्टर (एसडीआईपी) विनीता मानिकपुरी ने 22 अक्टूबर 2024 को देवसुंदरा पोस्ट ऑफिस का निरीक्षण किया था। आरोप था कि पोस्टमास्टर के दस्तावेजों में कुछ गड़बड़ियां हैं।

किस्तों में मांगी गई रिश्वत: इसके बाद डाक विभाग के दोनों अधिकारियों ने पोस्टमास्टर निर्जला मनहर को कानूनी कार्रवाई का धौंस दिखाया। इसके बाद उन गड़बड़ियों पर पर्दा डालने के लिए रिश्वत मांगी। पहली किस्त में 40 हजार रुपए देने की सहमति बनी, लेकिन पोस्टमास्टर निर्जला ने 19 नवंबर को रिश्वत मांगने की शिकायत सीबीआई से कर दी। सीबीआई को रिश्वत की शिकायत मिलते ही टीम एक्टिव हो गई। आरोपियों को रंगेहाथों पकड़ने के लिए सीबीआई की टीम ने प्लानिंग की। इसके बाद टीम ने 23 नवंबर को निर्जला मनहर को 37 हजार रुपए कैश के साथ रिश्वत देने के लिए ऑफिस भेजा। आरोपियों को रिश्वत देते ही सीबीआई ने पकड़ लिया।

आज रायपुर में किया जाएगा पेश: पूछताछ और बयान दर्ज करने के बाद ओवरसियर राजेश पटेल और सब डिवीजनल इंस्पेक्टर विनीता मानिकपुरी को गिरफ्तार कर लिया गया है। आरोपियों के आवासीय परिसर और दफ्तरों की भी तलाशी ली गई। जांच पूरी होने के बाद आज यानी रविवार को दोनों को रायपुर सीबीआई कोर्ट में पेश किया जाएगा।

फाइन से बचने दो युवकों ने बदला गाड़ी नंबर, 5 को बनाया 6

रायपुर में किसी और के पास पहुंचा 39 हजार का ई-चालान

रायपुर में ट्रैफिक फाइन से बचने के लिए के लिए 2 युवकों ने शातिर दिमाग लगाया। आरोपियों ने गाड़ी के नंबर प्लेट में छेड़छाड़ करते हुए गाड़ी का नंबर ही बदल दिया। एक बाइक में 5 नंबर को 6 बनाया तो वहीं दूसरे ने एक्टिवा में 8 नंबर को मार्कर से 8 बना दिया।

इसके बाद युवक बेखौफ ट्रैफिक नियम तोड़ते हुए शहर में गाड़ी दौड़ाते रहे। इस दौरान किसी और के पास अलग-अलग कर 39 हजार तक का ई-चालान पहुंच गया। अब ट्रैफिक पुलिस की शिकायत के बाद सिविल लाइन पुलिस ने दोनों युवकों के खिलाफ गैर जमानती अपराध दर्ज किया। आरोपियों को जेल भेजा गया है।

ऐसे हुआ खुलासा: इस मामले का खुलासा तब हुआ जब छेड़छाड़ से बने नंबर के असली मालिक के पास कई बार ई-चालान आया। पीड़ित अरुण अवस्थी और दीपक देवांगन नाम के व्यक्ति ट्रैफिक पुलिस के दफ्तर पहुंचे। उन्होंने बताया कि उनके गाड़ी नंबर पर करीब दर्जन भर बार ई-चालान का मैसेज आया है। जबकि उन्होंने नियम भी नहीं तोड़ा है।

पुलिस कर्मियों ने जब जांच की तो पता चला 2 युवकों ने अपनी गाड़ी के नंबर से छेड़छाड़ की है। वीडियो को जूम करके देखने पर उनके नंबर प्लेट पर छेड़छाड़ दिखाई दी। जिसके बाद पुलिस ने छानबीन शुरू की।

इस तरह दे रहे थे चकमा: इस मामले की गंभीरता को देखते हुए ट्रैफिक पुलिस ने सिविल लाइन पुलिस में शिकायत दी। इसके बाद ताज नगर के निवासी मोहम्मद अहमद और राजा तालाब के निवासी भावेश सावरकर को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने जब इनके गाड़ी नंबर को देखा तो वे हैरान रह गए।

दरअसल, एक आरोपी के बाइक का नंबर था ष्ट 3559 इसमें एक 5 को आरोपी ने 6 बना दिया था। वहीं दूसरे आरोपी की स्कूटी का नंबर था 5289 इसने अंतिम के नंबर 9 को मार्कर से 8 बना दिया था। इनमें से एक गाड़ी पर 9 ई-चालान था, जिसमें 39 हजार रुपए फाइन था। दूसरी गाड़ी पर 4 ई-चालान था, जिसमें 14 हजार रुपए फाइन था।

गैर-जमानती अपराध में गए जेल: आरोपियों ने पुलिस को बताया कि उन्होंने ई-चालान से बचने के लिए नंबर बदले थे। सिविल लाइन थाना प्रभारी रोहित मानेकर ने बताया कि दोनों आरोपियों को नंबर टेंपरिंग करने के मामले में गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों के खिलाफ सिविल लाइन थाने में बीएनएस की धाराओं में गैर जमानती धाराओं में अपराध दर्ज हुआ है।

दो युवकों को एक ही युवती से एकतरफा प्यार, एक ने बात करने से मना किया तो चाकू गोदकर की हत्या

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के खैरागढ़-छुईखदान-गंडई जिले में शनिवार की रात युवक की चाकू गोदकर हत्या कर दी गई। यह ?पूरा मामला एकतरफा प्यार का है। दो युवकों को एक ही युवती से एकतरफा प्यार था, जिसे लेकर यह वारदात हुई। मामला साल्हेवारा थाना क्षेत्र के खादी गांव का है। जानकारी के मुताबिक मृतक धीरज यादव (20 साल) ने आरोपी सीताराम पटेल (19 साल) को मिलने बुलाया था। इस दौरान धीरज ने सीताराम को कहा कि, वह युवती को परेशान ना करे और दोनों के बीच ना आए। इसी बात को लेकर दोनों में बहस हो गई। विवाद बढ़ने पर आरोपी सीताराम पटेल ने धीरज पर चाकू से हमला कर दिया।

चेहरे और गले पर 10 से ज्यादा बार वार: आरोपी ने युवक के शरीर पर 10 से ज्यादा बार वार किया। चेहरे और गले को बुरी तरह गोदा। लहूलुहान युवक ने मौके पर तड़प-तड़पकर दम तोड़ दिया। वारदात से इलाके में हड़कंप मच गया। देखते ही देखते सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण सड़क पर आ गए और पूरे गांव में तनाव का माहौल बन गया।

ग्रामीणों ने रात भर किया प्रदर्शन: घटना की सूचना पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंचकर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर आगे की कार्रवाई शुरू की, लेकिन इसके बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने पूरी रात बवाल किया। ग्रामीणों ने मृतक के शव को घटनास्थल पर ही रखकर रातभर प्रदर्शन किया।

बकरकट्टा-गंडई थाने से बुलाया गया पुलिस बल: गांव वाले इतने आक्रोशित थे कि, वे खुद आरोपी को सजा देने की बात करने लगे। ग्रामीण पुलिस से आरोपी को सौंपने की मांग कर रहे थे। बिगड़ते माहौल को देखते हुए साल्हेवारा पुलिस ने बकरकट्टा और गंडई थाने से पुलिस बल बुलाया और मौके पर पहुंच कर ग्रामीणों के बवाल के बीच शव का पंचनामा किया।

गांव में भी स्थिति सामान्य- थाना प्रभारी: ग्रामीणों को समझाकर मामले को शांत कराया गया। फिलहाल पुलिस ने आरोपी सीताराम पटेल को गिरफ्तार कर लिया है और मामले में आगे की कार्रवाई में जुट गई है। साल्हेवारा थाना प्रभारी धमेंद्र वैष्णव ने कहा कि गांव में भी स्थिति सामान्य है।

दो बेटों ने पिता को पीट-पीटकर मार डाला, दुर्ग में शराब के 100 रुपए को लेकर विवाद

हत्या को हादसा बताया, मां ने खोला राज

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के दुर्ग में दो बेटों ने अपने पिता की पीट-पीटकर हत्या कर दी। दरअसल, भाई ने दूसरे भाई को शराब लाने के लिए 100 रुपए दिए थे, लेकिन शराब नहीं लाने पर दोनों के बीच विवाद हो गया। पिता ने उन्हें समझाने की कोशिश की, तो दोनों ने मिलकर उसे ही मार डाला। घटना उतई थाना क्षेत्र की है।

बेटों ने हत्या को हादसा बताने की कोशिश की, लेकिन मां ने पुलिस के सामने राज खोल दिए। पुलिस ने मृतक भगवान सिंह ठाकुर (55 साल) के शव को पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया है। वहीं, आरोपी दोनों बेटे को शनिवार को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेज दिया है। उतई थाना प्रभारी विपिन रंगारी ने बताया कि, परेवाडीह गांव निवासी शशि ठाकुर (30 साल) और दशरथ ठाकुर (25 साल) दोनों सगे भाई हैं। शराब पीने के आदी हैं। 22 नवंबर की रात करीब 10 बजे बड़ा भाई शशि ठाकुर शराब के नशे में घर पहुंचा, तो छोटे भाई दशरथ से विवाद करने लगा।

शराब के 100 रुपए को लेकर विवाद: शशि ने कहा कि, उसने 100 रुपए शराब लाने के लिए दिए थे, तो क्यों नहीं लाया? जिस पर दशरथ ने कहा कि, उसने शराब के लिए 100 रुपए दोस्त काशी को दिया था। वो बताएगा कि शराब लाया या नहीं। इसी बात को लेकर उनके बीच मारपीट होने लगी।

भाई का सिर फोड़ा, मां पर भी हमला: इतने में ही शशि ने पास में रखे लकड़ी से दशरथ पर हमला कर सिर फोड़ दिया। जिससे वो खून से लहूलुहान हो गया। यह देख मां अंकलहिन बाई शांत कराने पहुंची। गुस्से में शशि ने मां के सिर पर भी लकड़ी से हमला कर दिया। झगड़ा बढ़ता देख पिता भगवान सिंह ठाकुर ने दोनों बेटों को डांटा और शांत रहने को कहा, लेकिन वे नहीं माने।

शशि ने घुटने से गला दबाया, दशरथ ने छाती पर मारी लात: पिता ने उनके पैर भी पकड़ लिए और विवाद बंद करने को कहा। गुस्से में बेटों ने पिता को हाथ-मुक्के और लात से जमकर पिटाई कर दी। शशि ने घुटने से गला दबा दिया और दशरथ ने छाती पर लात से हमला कर दिया। इस हमले में भगवान सिंह की मौके पर मौत हो गई। फिलहाल, पुलिस जांच कर रही है।

रिटायर-जवान को घर में घुसकर कटर से मारा, खून से सने शख्स ने भी चलाई गोलिया

कार की चाबी नहीं देने पर विवाद

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के भिलाई में शनिवार रात बाइक-कार की चाबी नहीं देने पर बदमाशों ने रिटायर ष्ठद्धसफ्रिक्र जवान पर कटर से हमला कर दिया, जिससे उसके चेहरे पर गहरी चोट आई है। इस दौरान खून से सने पूर्व जवान ने जब सर्विस रिवाल्वर से गोलियां चलाई तो आरोपी भाग निकले। मामला नेवई थाना क्षेत्र का है। नेवई पुलिस के मुताबिक, मरोदा निवासी आदतन बदमाश शंभू और विजय चौधरी राकेश सिंह और राकेश सिंह भदौरिया आपस के परिचित हैं। 23 नवंबर की दोपहर 2 बजे शंभू और विजय रिटायर जवान राकेश सिंह भदौरिया के पास गए। उसकी बाइक मांग रहे थे, लेकिन राकेश ने शंभू को बाइक देने से मना कर दिया।

बाइक की चाबी नहीं देने पर विवाद: चाबी नहीं देने के बाद शंभू और विजय ठाकुर शराब दुकान पहुंचे। वहां से शराब लेकर जमकर पी। इसके बाद नशे में धुत शाम

4.30 बजे फिर राकेश भदौरिया के घर पहुंचे। वहां दोनों ने फिर कार की चाबी मांगी। इस पर राकेश ने उन्हें गाड़ी देने से मना कर दिया, जिसके बाद शंभू ने राकेश से जमकर विवाद किया। घर में घुसकर शंभू और चौधरी ने राकेश पर कटर से हमला कर दिया।

चेहरे पर 4-5 टांके लगे: हमले में राकेश के बाएं कान के नीचे चोटें आई हैं। ज्यादा खून बहता देख उसने अपनी लाइसेंसी रिवाल्वर से फायरिंग कर दी। गोली की आवाज सुनते ही दोनों आरोपी भाग गए। राकेश ने इसकी सूचना नेवई पुलिस को दी। उसके परिचितों ने इलाज के लिए उसे अस्पताल पहुंचाया। जहां इलाज के बाद डिस्चार्ज कर दिया गया है। चेहरे पर 4-5 टांके लगे हैं। अभी उसकी हालत सामान्य बताई जा रही है।

दोनों आरोपी गिरफ्तार: नेवई थाना प्रभारी का कहना है कि, पुलिस ने शंभू और उसके साथी विजय ठाकुर को देर रात स्टेशन के पास से गिरफ्तार कर लिया है। दोनों आरोपियों के खिलाफ हत्या का प्रयास समेत घर में घुसकर जानलेवा हमला करने जैसी गंभीर धाराओं के तहत केस दर्ज किया है।

ब्याज पर पैसे देता है पूर्व जवान: पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक रिटायर जवान राकेश सिंह भदौरिया ब्याज पर पैसे देने का काम करता है। पुलिस इस एंगल से भी जांच कर रही है कि, कहीं इनका ब्याज के पैसे को लेकर तो विवाद नहीं हुआ है। फिलहाल, पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है।

सरगुजा संभाग के जिलों में कड़ाके की ठंड, दुर्ग में पारा सामान्य से 5 डिग्री कम

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में उत्तर से आ रही हवाओं के कारण ठंड लगातार बढ़ती जा रही है। सरगुजा संभाग के जिलों में कंपाने वाली ठंड पड़ रही है। अंबिकापुर में न्यूनतम तापमान 8.4 डिग्री और पहाड़ी इलाकों में न्यूनतम तापमान 7 डिग्री पर पहुंच गया है, जो अभी सबसे ज्यादा ठंडा है। लोग गर्म कपड़े और अलाव का सहारा ले रहे हैं।

मौसम विभाग के मुताबिक बिलासपुर, सरगुजा और दुर्ग संभाग में न्यूनतम तापमान सामान्य से कम, रायपुर और बस्तर संभाग में न्यूनतम तापमान सामान्य रहा। अगले 3 दिनों में दक्षिण छत्तीसगढ़ में न्यूनतम तापमान में कोई विशेष परिवर्तन होने की संभावना नहीं है।

सरगुजा सबसे ठंडा: सरगुजा संभाग के जिलों में बीते एक सप्ताह से पड़ रही ठंड ने लोगों की हालत खराब कर दी रहै। दिसंबर जनवरी के महीने में पड़ने वाली ठंड नवंबर में ही पड़ रही है। प्रदेश में सबसे कम पारा अंबिकापुर में रिकॉर्ड किया गया। यहां रात का पारा सामान्य से 3.3 डिग्री कम रहा।

दुर्ग में रात का पारा सामान्य से 5 डिग्री नीचे: दुर्ग जिले में लगातार रात के तापमान में गिरावट बनी हुई है। शनिवार को दुर्ग में रात का पारा 12.4 डिग्री रहा जो सामान्य से करीब 5 डिग्री (4.8) डिग्री कम रहा। तकनीकी रूप से देखा जाए तो सरगुजा के बाद दुर्ग में अन्य जिलों के मुकाबले ज्यादा ठंड है।

साइकिल चोरी के विवाद में व्यक्ति की हत्या

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बालोद जिले में रोड किनारे व्यक्ति की लाश मिली थी। पुलिस ने मामले का खुलासा करते हुए बताया कि साइकिल चोरी को लेकर हुए विवाद में 2 लोगों ने उसकी गला घोंटकर हत्या कर दी। वारदात अर्जुन्दा थाना क्षेत्र की है। पुलिस को सूचना मिली कि ग्राम बोरगहन से परसवानी मार्ग पर एक अज्ञात व्यक्ति का शव पड़ा हुआ है। पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। मृतक की पहचान ग्राम बासिन निवासी दुखुराम मरकाम के रूप में हुई। लाश के पास एक साइकिल भी मिली, जिसमें प्लास्टिक की खाली बोरी बंधी हुई थी।

दिल्ली में एक्यूआई-412, इस महीने 8 दिन प्रदूषण गंभीर रहा

नई दिल्ली। दिल्ली की हवा लगातार जहरीली बनी हुई है। रविवार सुबह करीब 7 बजे दिल्ली के 7 जगहों पर एक्यूआई 400 के पार रिकॉर्ड किया गया। प्रदूषण का सबसे खतरनाक लेवल आनंद विहार में देखा गया। यहां 412 रिकॉर्ड किया गया। हालांकि, दिल्ली की हवा में मामूली सुधार हुआ है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, औसत एक्यूआई रविवार को 366 दर्ज किया गया। शनिवार को 412 रिकॉर्ड गिया गया था।

सीपीसीबी के डेटा के मुताबिक, नवंबर में दिल्ली का एक्यूआई 300 से नीचे नहीं आया है, इसलिए दिल्ली में 8 गंभीर और 15 बहुत खराब दिन दर्ज किए। राजधानी में नवंबर 2023 में 9 और 2022 में 3 गंभीर दिन देखे गए थे। दिल्ली के अलावा मध्य भारत के कई शहर भी धुंध और कोहरे की चादर में हैं। चिंता की बात यह है कि अभी धुंध का पीक आना बाकी है। मौसम विभाग के मुताबिक, दिसंबर-जनवरी में धुंध वाले दिनों की संख्या सामान्य से अधिक हो सकती है। यह धुंध पहले से ज्यादा घनी भी होगी। तापमान में गिरावट और आने वाले दिनों में नमी 80त्न से अधिक रहेगी। इनसे न केवल कोहरा बनेगा बल्कि घनी आबादी के इलाकों में वाहनों, कारखानों के धुएं और निर्माण कार्यों की धूल से मिलकर कोहरा धुंध में तब्दील होगा।

सिद्धू के नीम-हल्दी से कैंसर के इलाज का दावा खारिज

जालंधर। पंजाब कांग्रेस नेता और पूर्व क्रिकेटर नवजोत सिद्धू के पत्नी को कैंसर से ठीक करने वाले इलाज के दावे पर विवाद हो गया है। सिद्धू ने कहा था कि उन्होंने आयुर्वेदिक तरीके से पत्नी का इलाज किया। कैंसर सेल्स को बढ़ाने वाली मीठी चीजों को बंद किया। जिसके बाद पत्नी डॉ. नवजोत कौर सिद्धू कैंसर फ्री हो गईं। सिद्धू ने इस बारे में प्रेस कॉन्फ्रेंस भी की। इसका वीडियो वायरल होने के बाद अब टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल की अगुआई में 262 ऑन्कोलॉजिस्ट ने इस दावे पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा है कि सिद्धू की बताई कुछ चीजों पर रिसर्च जरूर चल रही है, लेकिन इनसे ठीक हो जाने का दावा सही नहीं है। उन्होंने कहा कि सिद्धू के दावे के पर्याप्त सबूत नहीं हैं। ऐसे में लोगों को कैंसर जैसे लक्षण होने पर तुरंत अस्पताल में जांच करानी चाहिए। पूर्व क्रिकेटर नवजोत सिंह सिद्धू ने कहा कि मेरी पत्नी डॉ. नवजोत कौर सिद्धू (नोनी) अब कैंसर फ्री हो चुकी हैं। मुझ पर जब यह आपदा आई तब मैं जेल में था। जब में जेल से छूट कर आया तब नोनी का ऑपरेशन हो चुका था। नोनी की कीमोथैरपी हुई, लंबे अरसे तक इसका इलाज चला। पूरा परिवार साथ खड़ा रहा। एक वक्त आया कि नोनी को लगा कि शायद मैं न बचूं तो बेटे की शादी करवा दो। तब नोनी अस्पताल में थी। बेटे की शादी के दौरान नोनी ने कुछ हफ्तों के लिए अपना इलाज मिस कर दिया। नवजोत सिंह सिद्धू ने आगे कहा- इलाज मिस किया तो कुछ दिनों बाद पता चला कि कैंसर फिर से हो गया है।

प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम से सदैव कुछ नया करने की मिलती है प्रेरणा-मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में मध्यप्रदेशवासियों द्वारा सामूहिक प्रयासों से पर्यावरण-संरक्षण के लिए किए जा रहे कार्यों की सराहना की है। यह निश्चित रूप से सभी के लिए गर्व और प्रेरणा का विषय है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम से सदैव कुछ नया करने की प्रेरणा मिलती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मुंबई प्रवास के दौरान प्रधानमंत्री श्री मोदी के मन की बात कार्यक्रम के 116 वां संस्करण सुनने के बाद यह विचार व्यक्त किए। रविवार 24 नवंबर को प्रधानमंत्री

श्री मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में एक पेड़ मां के नाम अभियान अंतर्गत इंदौर में पेड़ लगाने के बने रिकॉर्ड का उल्लेख करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश के इंदौर में अभियान अंतर्गत 24 घंटे में 12 लाख से ज्यादा पेड़ लगाए गए। अभियान में हुई जन-सहभागिता से इंदौर की रेवती हिल्स का बंजर इलाका अब ग्रीन जोन में बदल जाएगा। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने डिजिटल क्रांति में बुजुर्गों को भागीदार बनाने के लिए युवाओं द्वारा की जा रही पहल के अंतर्गत भोपाल के महेश का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने अपने मोहल्ले के कई बुजुर्गों को मोबाइल के माध्यम से पेमेंट करना सिखाया है। इन बुजुर्गों के पास स्मार्टफोन तो था, लेकिन उसका सही उपयोग बताने वाला कोई नहीं था। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने आहवान किया कि बुजुर्गों को डिजिटल अरेस्ट के खतरे से बचाने के लिए भी युवा आगे आएं। उन्होंने यह भी कहा कि हमें बार-बार लोगों को समझना होगा कि डिजिटल अरेस्ट नाम का सरकार में कोई भी प्रावधान नहीं है। यह सरासर झूठ है, लोगों को फसाने का एक षड्यंत्र है। यह प्रसन्नता का विषय है कि देश के युवा जागरूकता के इस काम में पूरी संवेदनशीलता से हिस्सा ले रहे हैं

पूर्व सीजेआई बोले- राजनीति में जाने का इरादा नहीं

नई दिल्ली। पूर्व सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ से पूछा गया कि क्या वे कभी राजनीति में आएंगे। उन्होंने कहा- वे 65 साल की उम्र के बाद ऐसा कुछ नहीं करेंगे, जिससे उनके काम और न्यायिक प्रणाली की ईमानदारी पर संदेह पैदा हो। चंद्रचूड़ रविवार को एनटीवी इंडिया के संविधान 75 कॉन्क्लेव में पहुंचे थे। उनसे सवाल किया गया कि क्या रिटायरमेंट के बाद जजों को राजनीति में आना चाहिए। इसके जवाब में उन्होंने कहा- संविधान या कानून में ऐसा करने पर कोई रोक नहीं है। हमारा समाज पूर्व जजों को कानून के संरक्षक के रूप में देखता है। उनकी लाइफ स्टाइल

समाज के कानूनी सिस्टम के मुताबिक होनी चाहिए। जजों को सोशल मीडिया ट्रोलिंग पर राय नहीं बनानी चाहिए पूर्व सीजेआई ने कहा- जजों को ट्रोलिंग से बहुत सावधान रहना होगा। ट्रोलर्स कोर्ट के फैसलों को बदलने की कोशिश कर रहे हैं। लोकतंत्र में कानूनों की वैधता तय करने की पावर कॉन्स्टिट्यूशनल कोर्ट को सौंपी गई है। पावर के सेपरेशन में नियम हैं। जैसे कानून बनाने का काम विधायिका करेगी, कानून का क्रियान्वयन कार्यपालिका करेगी और ज्यूडिशियरी कानून की व्याख्या और विवादों का फैसला करेगी। हालांकि कई बार ये तनावपूर्ण हो जाता है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में नीति निर्माण का काम सरकार को सौंपा जाता है। जब मौलिक अधिकारों की बात आती है तो संविधान के तहत कोर्ट का कर्तव्य है कि वे हस्तक्षेप करें।

महाराष्ट्र में महायुति की सरकार, 230 सीटें जीती

मुंबई। देवेंद्र फडणवीस ने दुष्यंत कुमार का यह शेर 1 दिसंबर 2019 को? महाराष्ट्र विधानसभा में पढ़ा था। 28 नवंबर 2019 को भाजपा से अलग होकर उद्धव ठाकरे ने कांग्रेस और एनसीपी के समर्थन से मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। उद्धव ठाकरे की वजह से ही फडणवीस सीएम बनते-बनते रह गए थे। 23 नवंबर 2024, यानी 5 साल पूरे होने के 5 दिन पहले महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव का रिजल्ट आया। भाजपा 149 सीटों पर लड़ी, 132 सीटें जीतीं। उसके गठबंधन ने 288 सीटों में से रिकॉर्ड 230 सीटें जीतीं। भाजपा का स्ट्राइक रेट 88 प्रतिशत रहा। हालांकि, वोट शेयर (26.77 प्रतिशत) में मामूली इजाफा हुआ। 2019 के चुनाव में वोट शेयर 26.10त्न था। 0.67 वोट मार्जिन के साथ भाजपा को 27 सीटों का फायदा हुआ। महा विकास अघाड़ी को 46 सीटें मिलीं कांग्रेस नेतृत्व वाले महा विकास अघाड़ी को 46 सीटें मिलीं। इस चुनाव में मुकाबला 6 बड़ी पार्टियों के दो गठबंधन में था। महायुति में भाजपा, शिवसेना (एकनाथ शिंदे) और एनसीपी (अजित पवार) शामिल है।

जगद्गुरु कृपालु महाराज की बेटियों की कार का एक्सीडेंट, बड़ी बेटी की मौत... दो बेटियां जखमी

नई दिल्ली। रविवार सुबह उत्तर प्रदेश के नोएडा में यमुना एक्सप्रेसवे पर भीषण सड़क हादसा हुआ, जिसमें जगद्गुरु कृपालु महाराज की बड़ी बेटी डॉ. विशाखा त्रिपाठी का निधन हो गया। हादसे में उनकी दोनों बहनें, श्यामा त्रिपाठी और कृष्णा त्रिपाठी समेत अन्य 8 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। हादसा ग्रेटर नोएडा के दनकौर इलाके में हुआ। कृपालु महाराज के मुख्य शिष्य एवं प्रेम मंदिर के मुख्य सेवक अजय त्रिपाठी ने संवाददाताओं को बताया कि जगतगुरू दिवंगत कृपालु महाराज की तीनों बेटियां तड़के चार बजे सिंगापुर जाने के लिये दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे जा रही थीं कि इसी दौरान रास्ते में नोएडा में पीछे से आ रहे एक तेज रफ्तार कैंटर ने उनकी कारों को टक्कर मार दी। उन्होंने बताया कि इस दुर्घटना में कृपालु महाराज की बेटियों विशाखा त्रिपाठी (75), कृष्णा त्रिपाठी तथा श्यामा त्रिपाठी सहित आठ लोग घायल हो गए।

उन्होंने बताया कि विशाखा त्रिपाठी की कुछ ही देर में मौके पर ही मौत हो गई। उनकी दोनों छोटी बहनों को गंभीर रूप से घायल हालत में दिल्ली के अपोलो अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्होंने बताया कि उनकी स्थिति बेहद नाजुक बतायी जा रही है। अन्य घायलों को भी अस्पताल में उपचार जारी है।

देश के 3 राज्यों में बर्फबारी, 9 में घना कोहरा

नई दिल्ली/भोपाल/जयपुर। जम्मू-कश्मीर के साथ-साथ अब हिमाचल प्रदेश और लद्दाख में भी बर्फबारी का दौर शुरू हो गया है। हिमाचल के कुल्लू जिले के रोहतांग पास और अटल टनल के पास रविवार को बर्फबारी हुई। वहीं, जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा, गुलमर्ग, बांदीपोरा और लद्दाख के लेह में भी रविवार को बर्फबारी हुई। तीनों राज्यों में सोमवार को भी बर्फ गिरने का अनुमान जताया गया है। मौसम विभाग ने देश के 8 राज्यों में घना कोहरा छाने का भी अनुमान जताया है। इनमें पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश और दिल्ली शामिल है।

भारत और नॉर्वे के बीच टीईपीए समझौते पर चर्चा

नई दिल्ली। भारत के वाणिज्य सचिव सुनील भार्थवाल ने शुक्रवार, 22 नवंबर को नॉर्वे का दौरा किया। उनका यह दौरा भारत-यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ देशों के साथ व्यापार और आर्थिक साझेदारी समझौता लागू करने में तेजी लाने और 100 अरब डॉलर के निवेश को बढ़ावा देने के उद्देश्य से था। भार्थवाल का नॉर्वे दौरा भारत और ईएफटीए देशों के बीच टीईपीए समझौते को और अधिक सुदृढ़ करने के लिए था। इस समझौते के तहत, भारत को ईएफटीए देशों के बाजारों में अपने उत्पादों और सेवाओं के निर्यात के लिए 99.6 प्रतिशत बाजार का अधिकार मिलेगा। इसमें गैर-कृषि उत्पादों और प्रसंस्कृत कृषि उत्पादों पर महत्वपूर्ण टैक्स छूट दी जाएगी। भारत ने ईएफटीए देशों को 82.7 प्रतिशत अपनी टैक्स लाइनों की पेशकश की है, जो ईएफटीए के निर्यात का 95.3 प्रतिशत हिस्सा कवर करता है। भारत ने श्वस्त्रङ्क के लिए 105 उप-क्षेत्रों की पेशकश की है, जबकि नॉर्वे ने 114 क्षेत्रों में प्रतिबद्धता

की है। भार्थवाल ने नॉर्वे में टॉमस नॉर्वोल (राज्य सचिव, मंत्रालय व्यापार, उद्योग और मछलीपालन) और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक की। इन बैठकों में मुख्य रूप से व्यापार संबंधों को बढ़ावा देना, भारतीय निर्यात को प्रोत्साहन देना, और ईएफटीए के अनुमोदन में तेजी लाने के मुद्दों पर चर्चा की गई। इसके अलावा, वाणिज्य सचिव ने नॉर्वेजियन संसद के सदस्यों से भी मुलाकात की और समझौते के संभावित लाभों पर जोर दिया।

8 बार विधायक रहे कांग्रेस के दिग्गज नेता थोराट को हार का सामना करना पड़ा, 10,560 मतों से रहे पीछे

नई दिल्ली। चर्चा से दूर और मिलनसार नेता माने जाने वाले एवं आठ बार विधायक रहे कांग्रेस के वरिष्ठ नेता बालासाहेब थोराट को इस बार विधानसभा चुनाव में हार का सामना करना पड़ा है। निवर्तमान विधानसभा में सबसे वरिष्ठ विधायक और कांग्रेस विधायक दल के नेता 71 वर्षीय थोराट ने हाल ही में मुख्यमंत्री बनने की अपनी महत्वाकांक्षा का संकेत दिया था। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के शनिवार को घोषित नतीजों के मुताबिक, विजय भाऊसाहेब थोराट जिन्हें बालासाहेब थोराट के नाम से जाना जाता है, अहिल्यानगर जिले की संगमनेर सीट से शिवसेना के अमोल खटाल से 10,560 मतों के अंतर से हार गए। उन्होंने 1985 में संगमनेर से निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ा था। उसके बाद के सभी चुनाव उन्होंने कांग्रेस उम्मीदवार के तौर पर संगमनेर से जीते। पिछले महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव (2019) में उन्होंने कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष के रूप में पार्टी का नेतृत्व किया था।

उपचुनावों में राजद की हार कोई बड़ी बात नहीं, तेजस्वी यादव बोले- 2025 के विधानसभा चुनाव में करेंगे बेहतर प्रदर्शन

पटना। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) नेता तेजस्वी यादव ने बिहार में चार विधानसभा सीट पर हुए उपचुनावों में विपक्षी 'महागठबंधन% की हार के बाद शनिवार को दावा किया कि यह गठजोड़ राज्य में अगले होने वाले विधानसभा चुनाव में जीत हासिल करेगा। बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता यादव ने पड़ोसी राज्य झारखंड में अपनी पार्टी के उम्मीद से बेहतर प्रदर्शन पर खुशी जताई, जहां झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के

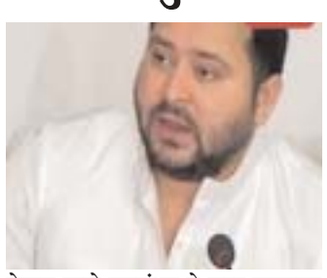

नेतृत्व वाले गठबंधन ने सत्ता बरकरार रखी है। झारखंड में साल 2019 के चुनाव में राजद ने केवल चतरा सीट पर जीत हासिल की थी, लेकिन इस बार उसने देवघर, गोड्डा, विश्रामपुर और हुसैनाबाद सीट जीतीं। बिहार में सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने चारों विधानसभा क्षेत्रों के उपचुनाव में जीत हासिल की है। यादव ने पटना में पत्रकारों से बात करते हुए कहा, कुछ सीट पर हार कोई बड़ी बात नहीं है। हाल के लोकसभा चुनाव में हमने इन विधानसभा क्षेत्रों में बढ़त हासिल की थीज्हम 2025 के विधानसभा चुनाव में बेहतर प्रदर्शन करेंगे।

अब ईवीएम से भी होने लगी बेईमानी नहीं लड़ेंगे उपचुनाव: मायावती

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) अध्यक्ष मायावती ने उत्तर प्रदेश विधानसभा के उपचुनाव में ईवीएम के जरिए फर्जी वोटिंग का आरोप लगाते हुए कहा कि उनकी पार्टी भविष्य में उपचुनाव नहीं लड़ेगी।

सुश्री मायावती ने रविवार को यहां कहा कि पहले बैलट पेपर के जरिए फर्जी मतदान की सूचनाओं मिलती थी जबकि अब इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के जरिए भी फर्जी मतदान होने लगा है इसलिए उनकी पार्टी ने फैसला लिया है कि भविष्य में किसी भी उपचुनाव में हिस्सा नहीं लेगी। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी लोकसभा, विधानसभा और निकाय चुनाव में पूरी ताकत से जनता के बीच अपनी उपस्थिति दर्ज कराएगी। उपचुनाव न लड़ने के सवाल पर उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि उपचुनाव में सरकारी मशीनरी पूरी तरह से सत्तारूढ़ दल के प्रभाव में होती है जबकि आम चुनाव में ऐसा नहीं है क्योंकि सरकारी मशीनरी को लगता है कि यदि विपक्षी दल सत्ता में आएगा तो उनके लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है

हेमंत सोरेन 28 नवंबर को सीएम पद की शपथ लेंगे

रांची। झारखंड में इंडिया ब्लॉक की दोबारा सरकार बनेगी। रविवार को इंडिया गठबंधन के नवनिर्वाचित विधायकों की बैठक ष्टरू आवास में हुई। इसमें हेमंत सोरेन विधायक दल के नेता चुन लिए गए। इसके बाद उन्होंने राजभवन जाकर सीएम पद से इस्तीफा दिया और नई सरकार बनाने का दावा पेश किया। राज्य गठन के बाद पहली बार है जब सरकार रिपीट हुई है। अब तक हर चुनाव में सरकार बदल जाती थी। राजभवन के बाहर पत्रकारों के साथ बातचीत में हेमंत सोरेन ने कहा- राज्यपाल संतोष गंगवार ने कार्यवाहक सीएम नियुक्त किया है। शपथ ग्रहण समारोह 28 नवंबर को होगा। समारोह सुबह 11.30 बजे होगा। सूत्रों के अनुसार, गठबंधन 5 विधायक पर एक मंत्री पद का फॉर्मूला तय कर सकता है। इसमें जेएमएम को 6, कांग्रेस को 1 और राजद को 1 मंत्री पद मिल सकता है।

शपथ ग्रहण समारोह में राहुल गांधी और तेजस्वी यादव शामिल हो सकते हैं। सूत्रों के अनुसार, नई सरकार में चाईबासा विधायक दीपक बिरुवा और घाटशिला से जीते रामदास सोरेन का दोबारा मंत्री बनना तय माना जा रहा है। इसके अलावा महतो वोट बैंक को साधने के लिए मथुरा महतो को शामिल किया जा सकता है। जेएमएम अल्पसंख्यक कोटे से हफीजुल हसन और एमटी राजा में से किसी को मंत्री बना सकती है। हफीजुल पिछली सरकार में मंत्री रह चुके हैं। पार्टी क्षेत्रीय संतुलन को साधन के लिए संथाल परगना और उत्तरी छोटानागपुर से किसी को मंत्री बना सकती है।

वहीं, कांग्रेस में अल्पसंख्यक कोटे से एकमात्र विधायक इरफान अंसारी जीते हैं। उनकी दोबारा लॉटरी लग सकती है। दूसरा नाम रामेश्वर उरांव को हो सकता है। उरांव पिछली सरकार में वित्त मंत्री थे। वह हेमंत कैबिनेट के सबसे अमीर मंत्री भी थे।

कांग्रेस प्रदीप यादव और दीपिका पांडेय सिंह में से किसी एक को मंत्री बना सकती है। जबकि, राजद की तरफ से संजय प्रसाद यादव और संजय कुमार यादव में से किसी एक का मंत्री बनना तय माना जा रहा है। झारखंड के मुख्यमंत्री और जेएमएम के कार्यकारी अध्यक्ष हेमंत सोरेन ने राज्यपाल को अपना इस्तीफा सौंप दिया और राजभवन में सरकार बनाने का दावा पेश किया। हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाली जेएमएम ने 81 सदस्यीय झारखंड विधानसभा में 56 सीटों के साथ इंडिया ब्लॉक को जीत दिलाई।

संसद का विंटर सेशन से अडाणी पर हंगामे के आसार

नई दिल्ली। 18वीं लोकसभा का तीसरा सत्र (शीतकालीन सत्र) 25 नवंबर से शुरू होने वाला है। इससे पहले रविवार को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में सर्वदलीय बैठक हुई। इस दौरान 30 पार्टियों के कुल 42 नेता मौजूद थे। कांग्रेस समेत विपक्षी नेताओं ने लोकसभा में पहले दिन अडाणी मामले पर बहस की मांग की है। अमेरिका की न्यूयॉर्क फेडरल कोर्ट ने गौतम अडाणी पर सोलर एनर्जी कॉन्ट्रैक्ट हासिल करने के लिए भारतीय अधिकारियों को लगभग 2,200 करोड़ रुपए की रिश्वत देने की पेशकश का आरोप लगाया है। राहुल गांधी ने इस मामले पर जेपीसी की मांग रखी है। कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी ने कहा कि उनकी पार्टी ने मणिपुर हिंसा, प्रदूषण, रेल दुर्घटनाओं पर भी संसद में चर्चा करने का प्रस्ताव रखा है। हालांकि संसदीय कार्यमंत्री किरण रिजिजू ने कहा- चर्चा के मुद्दों पर फैसला कार्य मंत्रणा समिति करेगी। विपक्ष सदन की कार्यवाही सुचारू रूप से चलने दे। संसद का शीतकालीन सत्र 20 दिसंबर तक चलेगा। इस दौरान 19 बैठकें होंगी। सरकार ने सत्र में वक्फ संशोधन विधेयक सहित 16 विधेयक की लिस्ट तैयार की है। लोकसभा बुलेटिन के मुताबिक लोकसभा में 8 और

राज्यसभा में 2 विधेयक लंबित हैं। इस सत्र में कार्यवाही शुरू होने से पहले केरल और नांदेड़ सीट से उपचुनाव जीतकर आए 2 नए सांसदों को लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला शपथ दिलाएंगे। संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान कुल 16 विधेयक पेश किए जाने हैं। इनमें से 11 विधेयक चर्चा के लिए रखे जाएंगे।

जबकि 5 कानून बनने के लिए मंजूरी के लिए रखे जाएंगे। वन नेशन वन इलेक्शन के लिए प्रस्तावित विधेयकों का सेट अभी सूची का हिस्सा नहीं है, हालांकि कुछ रिपोर्ट्स में कहा गया है कि सरकार इसे सत्र में ला सकती है। वहीं, राज्यसभा बुलेटिन में कहा गया है कि लोकसभा से पारित एक अतिरिक्त विधेयक भारतीय वायुयान विधेयक राज्यसभा में मंजूरी के लिए लंबित है। वक्फ संशोधन विधेयक पर संयुक्त समिति के 29 नवंबर को संसद में अपनी रिपोर्ट पेश करने की उम्मीद है, लेकिन यह तभी संभव है जब वह मानसून सत्र में दी गई समय सीमा का पालन करती है। हालांकि विपक्षी सदस्यों ने पैनल को अपनी रिपोर्ट देने के लिए समय बढ़ाने की मांग की है। हालांकि संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने कहा कि जेपीसी का कार्यकाल बढ़ाने का प्रावधान है, लेकिन अभी तक इस पर कोई चर्चा नहीं हुई है। इस पर चर्चा कार्य मंत्रणा समिति में होनी चाहिए। 22 अगस्त से लेकर जेपीसी ने 25 बैठकें की हैं।

इनमें 123 हितधारकों से सुझाव लिए गए हैं, जिनमें 6 मंत्रालय, 8 वक्फ बोर्ड और 4 अल्पसंख्यक आयोग शामिल हैं। वक्फ एक्ट 1995 को वक्फ संपत्तियों को रेगुलेट करने के लिए बनाया गया था, लेकिन इस पर भ्रष्टाचार और अतिक्रमण के आरोप लगे हैं। वक्फ (संशोधन) विधेयक 2024 के जरिए इसमें सुधार लाने, डिजिटाइजेशन, ऑडिट, ट्रांसपेरेंसी और अवैध रूप से कब्जे वाली संपत्तियों को वापस लेने के लिए कानूनी तंत्र शुरू करने का लक्ष्य रखा गया है।

के एल राहुल दिल्ली कैपिटल्स ने 14 करोड़ में अपने खेमे में किया शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के बल्लेबाज केएल राहुल को आईपीएल 2025 मेगा नीलामी में दिल्ली कैपिटल्स ने 14 करोड़ में खरीदा है। 2013 से आईपीएल में खेल रहे राहुल पिछले साल तक लखनऊ सुपर जांयट्स में थे। लेकिन इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिटेन नहीं किया। राहुल नीलामी में उतरे और उन पर फ्रेंचाइजियों ने जमकर बोली लगाई।

नतीजा ये रहा कि इस बार राहुल दिल्ली कैपिटल्स की जर्सी में नजर आएंगे। केकेआर और आरसीबी ने भी राहुल के लिए बोली लगाई। दोनों को कप्तान की जरुरत है और राहुल पंजाब के अलावा लखनऊ सुपर जायंट्स की कप्तानी कर चुके हैं। दोनों ही टीम लगातार राहुल की बोली बढ़ाती चली गईं। 11 करोड़ की कीमत के साथ दिल्ली ने बीच में एंट्री मार दी। 12 करोड़ पर केकेआर हट गई और यहां चेन्नई की एंट्री हो गई। राहुल को दिल्ली ने 14 करोड़ की आखिरी बोली में खरीदा।

साल 2022 में लखनऊ फ्रेंचाइजी ने आईपीएल में कदम रखा। राहुल पंजाब किंग्स से इस फ्रेंचाइजी में आए और कप्तान बना दिए गए। पहले ही सीजन में उन्होंने टीम को प्लेऑफ में पहुंचा दिया। लेकिन अगले सीजन वह चोट के कारण आधा सीजन ही खेल पाए। आईपीएल-2024 में वह वापस आए और लखनऊ की कप्तानी की। इस साल लखनऊ की टीम अच्छा नहीं कर पा रही थी। इसी बीच लखनऊ के मालिक संजीव गोयनका का राहुल पर गुस्सा करते हुए वीडियो वायरल हो गया।

मोहम्मद शमी पर लगी करोड़ों की बोली

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग के 18वें सीजन से पहले साउदी अरब के जेद्दा में मेगा ऑक्शन में हो रहा है। वहीं इस ऑक्शन में पिछले सीजन तक गुजरात टाइटंस का हिस्सा रहे तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी पर नीलामी में पैसों की बारिश हुई है। सनराइजर्स हैदराबाद ने उन्हें 10 करोड़ रुपये में अपने साथ जोड़ा है। उनका बेस प्राइस 2 करोड़ था। शमी पर अन्य फ्रेंचाइजी ने भी बोली लगाए लेकिन आखिर में बाजी हैदराबाद ने मारी। दूसरे सेट के पहले प्लेयर शमी पर कोलकाता नाइट राइडर्स और चेन्नई सुपर किंग्स ने बोली लगाना शुरू किया। इसके बाद लखनऊ सुपर जायटंस् भी मैदान में उतरी। आखिर में सनराइजर्स हैदराबाद की एंट्री हुई। गुजरात टाइटंस ने राइट टू मैच कार्ड का इस्तेमाल नहीं किया। ऐसे में हैदराबाद ने उन्हें 10 करोड़ रुपये में खरीद लिया। मोहम्मद शमी आईपीएल में अब तक 4 फ्रेंचाइजी के लिए खेल चुके हैं। आईपीएल 2013 में वह कोलकाता नाइट राइडर्स से जुड़े थे। पहले सीजन उन्हें 3 ही मैच खेलने का मौका मिला था। आईपीएल 2014 से पहले दिल्ली डेयरडेविल्स ने शमी को साइन किया। उस सीजन शमी ने 12 मैच में 7 विकेट अपने नाम किए। अगले सीजन इंजरी के चलते शमी कोई मैच नहीं खेल पाए। आईपीएल 2018 में भी शमी को इंजरी हुई, ऐसे में फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिलीज कर दिया।

ऋषभ पंत. बने आईपीएल इतिहास में सबसे महंगे खिलाड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन में खिलाड़ियों पर पैसों की जमकर बारिश हो रही है। वहीं आईपीएल के 17 साल के इतिहास में ऋषभ पंत अभी तक सबसे महंगे खिलाड़ी बने हैं। उन्हें लखनऊ सुपर जायंट्स ने 27 करोड़ रुपये में अपनी टीम में शामिल किया है। इसके साथ ही पंत ने श्रेयस अय्यर का रिकॉर्ड कुछ ही मिनटों में तोड़ दिया।

2016 के बाद पहली बार पंत दिल्ली के अलावा किसी और टीम से खेलते हुए दिखेंगे। पंत हाल फिलहाल में शानदार फॉर्म में रहे हैं। उन्होंने पिछले साल कार एक्सीडेंट के बाद वापसी करते हुए बेहतरीन प्रदर्शन किया। लखनऊ की टीम उन्हें कप्तान बना सकती है। पंत इस तरह आईपीएल इतिहास में सबसे ज्यादा कीमत पर बिकने वाली खिलाड़ी बन गए हैं। उन्होंने इस मामले में श्रेयस अय्यर को पछाड़ दिया है जो थोड़ी देर पहले ही 26.75 करोड़ रुपये में बिके थे। पंत के लिए लखनऊ और आरसीबी के बीच शुरूआत में जंग देखने मिली। पंत दो करोड़ रुपये के आधार मूल्य के साथ नीलामी में उतरे थे और कम ही समय में उनकी कीमत 10 करोड़ रुपये के पार पहुंच गई थी। इस दौरान हैदराबाद भी दौड़ में शामिल हुई, लेकिन लखनऊ ने भी हार नहीं मानी।

विराट कोहली को कुछ साबित करने की जरूरत नहीं है, उनका योगदान अद्वितीय है-कपिल देव

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व दिग्गज हरफनमौला कपिल देव ने कहा कि विराट कोहली को कुछ साबित करने की जरूरत नहीं है और भारतीय क्रिकेट में उनका योगदान 'अद्वितीय' है। कोहली ने रविवार को पर्थ में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले टेस्ट मैच की दूसरी पारी में अपना 30वां टेस्ट शतक जड़ा। कोहली (नाबाद 100) और युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल (161) की शतकीय पारियों ने भारत ने इस मैच में अपना शिकंजा काफी मजबूत कर लिया। ऑस्ट्रेलिया में यह कोहली का सातवां शतक है। वह इसके साथ ही महान सचिन तेंदुलकर (छह शतक) के रिकॉर्ड को पीछे छोडकर इस देश में सबसे ज्यादा शतक बनाने वाले भारतीय बन गये। कपिल ने यहां विश्व समुद्र गोल्डन ईगल गोल्फ चैंपियनशिप के दौरान पीटीआई से कहा, ''जिन लोगों को आलोचना करनी है वे आलोचना करेंगे। कोई बड़ा खिलाड़ी अगर वापसी करने में बहुत समय लेता है तो मीडिया ऐसा काम करती है।'' उन्होंने कहा, '' हमें उसकी क्षमता और प्रतिभा देखनी चाहिये। वह बहुत बड़े खिलाड़ी है। उन्हें किसी को साबित करने की जरूरत नहीं है। उन्हें मुझे या मीडिया के सामने कुछ साबित करने की जरूरत नहीं है।'' भारत के इस पूर्व कप्तान ने कहा, ''उसने क्रिकेट के लिए जो किया है वह अद्भुत है। हम सभी को उसे शाबाशी देनी चाहिये। वह अगर बहुत अधिक रन नहीं बनाता है तो भी ठीक है।उन्होंने क्रिकेट को जो दिया है वह अद्वितीय है।''

उन्होंने जायसवाल की तारीफ करते हुए कहा किसी और खिलाड़ी से इस युवा बल्लेबाजी की तुलना करना बेमानी होगी। उन्होंने कहा, '' मुझे तुलना करना पसंद नहीं है।

मैं बस हमारे युवाओं को बेहतर करते हुए देखना चाहता हूं। नए रिकॉर्ड (हमेशा) बनते रहेंगे। युवाओं के लिए जरूरी है कि वे देश का प्रतिनिधित्व जिम्मेदारी के साथ करें।'' उन्होंने कहा, ''किसी भी खिलाड़ी की तुलना किसी से न करें। यह अनुचित है, (वे अलग-अलग परिस्थितियों, अलग-अलग युगों में खेलते हैं)। आज के युवा कहीं अधिक समझदार और आत्मविश्वास से लबरेज हैं। ''

जायसवाल के 161 रन और कोहली के नाबाद 40 रन से भारत की बढ़त 405

नई दिल्ली (एजेंसी)। यशस्वी जयसवाल की शानदार पारी 161 रन पर समाप्त हुई, जबकि विराट कोहली ने 40 रन बनाकर नाबाद रहकर छोटी सी गिरावट को रोका, जिससे भारत ने रविवार को यहां पर्थ स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले टेस्ट के तीसरे दिन चाय के समय 110 ओवर में 359/5 रन बनाकर अपनी बढ़त 405 तक पहुंचा दी।

भारत ने 18 गेंदों के अंतराल में आठ रन पर तीन विकेट गंवा दिए, जिसके बाद कोहली ने आकर्षक बाउंड्री के जरिए लय हासिल की और वाशिंगटन सुंदर के साथ छठे विकेट के लिए 38 रन की साझेदारी में अहम भूमिका निभाई, जो 14 रन बनाकर नाबाद हैं।

पिच पर अलग-अलग उछाल के साथ, भारत का लक्ष्य बाकी बल्लेबाजों को जितना हो सके उतना लंबे समय तक बल्लेबाजी करने के लिए प्रेरित करना होगा, ताकि ऑस्ट्रेलिया के लिए इस सतह पर बल्लेबाजी करना मुश्किल हो जाए। दूसरे सत्र की शुरुआत ऑस्ट्रेलिया के लिए तुरंत सफलता के साथ हुई, क्योंकि जोश हेज़लवुड की गेंद पर देवदत्त पडिक्कल आगे आए, लेकिन गेंद दूसरी स्लिप में चली गई और 25 रन पर आउट हो गए। जायसवाल ने स्टार्क की ओवरपिच डिलीवरी पर बहुत ही शानदार टाइमिंग से ऑन-ड्राइव किया और बैकवर्ड पॉइंट पर ड्राइव करके सिंगल लेकर अपना 150वां रन पूरा किया।

जायसवाल ने दो और बाउंड्री लगाई, इससे पहले कि मिशेल मार्श की शॉर्ट और वाइड गेंद को बैकवर्ड पॉइंट के हाथों में कट किया, जिससे उनकी 297 गेंदों पर 161 रन की मैराथन पारी समाप्त हो गई। वहां से, ऑस्ट्रेलिया ने भारत के रन-स्कोरिंग चार्ज में थोड़ी कमी की।

ऋषभ पंत नाथन लियोन के खिलाफ पिच पर आए, जिन्होंने टर्निंग-अवे डिलीवरी की, और बल्लेबाज चूक गए, और अपना संतुलन खो बैठे, एलेक्स कैरी ने उन्हें स्टंप कर दिया।

इसके बाद पैट कमिंस की स्किडी निप-बैकर ने ध्रुव जुरेल को एलबीडब्लू आउट कर दिया।लेकिन भारत की पारी पटरी पर लौट आई, जब वाशिंगटन सुंदर ने ट्रैविस हेड को लॉन्ग-ऑफ पर इनसाइड-आउट छक्का लगाया, जबकि कोहली ने स्टार्क की गेंद पर अपर कट लगाया और थर्ड मैन के ऊपर से छक्का लगाया - हालांकि गेंद सुरक्षा गार्ड के सिर पर लगी और इसके बाद उन्होंने लियोन को स्वीप करके चौका लगाया। दोनों ने अब तक बेहतरीन नियंत्रण बनाए रखा है और भारत की बढ़त को 400 से ऊपर पहुंचाने के लिए डटे रहे, यह देखते हुए कि पर्थ में पिच ने अपनी चालें चलनी शुरू कर दी हैं, एक पहलू जिसे स्टीव स्मिथ ने ब्रॉडकास्टर फॉक्स स्पोर्ट्स के साथ बातचीत में स्वीकार किया। खेल से काफी पीछे, वे इस समय 405 से आगे हैं। बहुत कुछ करना है, और फिर हमें बहुत अच्छी बल्लेबाजी करनी होगी। पिछले 45 मिनट में, पिच ने चालें चलनी शुरू कर दी हैं, और दरारें दिखाई देने लगी हैं। हमारे लिए अच्छे संकेत नहीं हैं, लेकिन हमें उन्हें अपने दिमाग से निकालकर गेंद को खेलना होगा। अगर यह आपको आउट कर देता है तो ऐसा ही हो।

संक्षिप्त स्कोर-

भारत 150 और 110 ओवर में 359/5 (यशस्वी जायसवाल 161, केएल राहुल 77; जोश हेजलवुड 1-28, मिशेल मार्श 1-35) ऑस्ट्रेलिया 104 से 405 रन से आगे

जॉर्डन कॉक्स अंगूठे में चोट के कारण न्यूजीलैंड में इंग्लैंड की टेस्ट सीरीज से बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। विकेटकीपर-बल्लेबाज जॉर्डन कॉक्स अंगूठे में चोट के कारण न्यूजीलैंड में इंग्लैंड की आगामी टेस्ट सीरीज से बाहर हो गए हैं, साथ ही टीम ने कहा कि उनके प्रतिस्थापन की घोषणा उचित समय पर की जाएगी। कॉक्स, जिन्होंने पहले इंग्लैंड के लिए वनडे और टी20 मैच खेले हैं, अगले सप्ताह क्राइस्टचर्च के हेगले ओवल में सीरीज के पहले मैच में जेमी स्मिथ की जगह टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने वाले थे, जो पितृत्व अवकाश पर हैं।

लेकिन सर जॉन डेविस ओवल में न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री एकादश के खिलाफ दो दिवसीय दौरे के मैच के दूसरे दिन खेलने से पहले स्पिन-गेंदबाजी कोच जीतन पटेल से थ्रोडाउन का सामना करते समय इंग्लैंड के नेट सत्र में उनके दाहिने अंगूठे में चोट लग गई।

हेड कोच ब्रेंडन मैकुलम ने एक बयान में कहा, मैं जॉर्डन (कॉक्स) के लिए दुखी हूं। न्यूजीलैंड आने के बाद से ही वह बल्ले और दस्ताने दोनों से अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। यही खेल है और दुर्भाग्य से ऐसी चीजें होती रहती हैं। हम उसके साथ रहेंगे और उसकी देखभाल करेंगे। वह लचीला है और भविष्य में कभी न कभी उसका समय आएगा। कॉक्स की अनुपस्थिति में, इंग्लैंड के उप-कप्तान ओली पोप ने अभ्यास मैच के अंतिम दिन विकेटकीपर की भूमिका निभाई और अगर प्रतिस्थापन खिलाड़ी पहले टेस्ट के लिए समय पर नहीं आता है तो वह विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी संभाल सकते हैं। पोप इससे पहले तीन बार टेस्ट में इंग्लैंड के लिए विकेटकीपर रह चुके हैं - एक बार 2019 में न्यूजीलैंड में और दो बार 2022 में पाकिस्तान में। उनकी अनुपस्थिति का मतलब यह भी है कि बाएं हाथ के बल्लेबाज जैकब बेथेल इस साल की शुरुआत में इंग्लैंड के लिए सफेद गेंद से डेब्यू करने के बाद अपनी पहली टेस्ट कैप हासिल कर सकते हैं।

जोकोविच ने अपने पुराने प्रतिद्वंद्वी एंडी मरे को नया कोच नियुक्त किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। लगभग एक दशक तक अपने साथ कई कठिन मुकाबले लड़ने के बाद, पूर्व विश्व नंबर 1 नोवाक जोकोविच ने अपने एक समय के प्रतिद्वंद्वी एंडी मरे को ऑस्ट्रेलिया में 2025 सीज़न के पहले ग्रैंड स्लैम के लिए अपना कोच नियुक्त किया है।

सर्बिया के 37 वर्षीय जोकोविच ने शनिवार को सोशल मीडिया पर घोषणा की कि लंबे समय से दोस्त और प्रतिद्वंद्वी एंडी मरे मेलबर्न में अगले ऑस्ट्रेलियन ओपन से उनके नए कोच होंगे। मरे ने इस साल की शुरुआत में पेरिस ओलंपिक में पेशेवर टेनिस से संन्यास ले लिया था।

मई 1987 में एक सप्ताह के अंतर से जन्मे, दोनों एटीपी रैंकिंग में शीर्ष पर चढ़े और दुनिया के सबसे बड़े मंचों पर मुकाबला किया, जोकोविच और मरे 36 एटीपी हेड-टू-हेड शोडाउन में भिड़े, जिनमें से पूर्व ने 25 जीते। वे 19 फाइनल में

मिले, जिसमें सात मेजर में चैंपियनशिप मैच और 2016 एटीपी फाइनल्स शामिल हैं। वे हाल ही में 2017 दोहा फाइनल में खेले थे।

अपने सोशल मीडिया चैनल पर एक वीडियो संदेश में अपनी साझेदारी की घोषणा करते हुए, जोकोविच ने कहा, हमारे खेल में हमारे बीच कुछ सबसे शानदार मुकाबले हुए। उन्होंने हमें गेम-चेंजर, जोखिम लेने वाले और इतिहास बनाने वाले कहा। मुझे लगा कि हमारी कहानी खत्म हो गई है। लेकिन पता चला कि इसमें एक अंतिम अध्याय है। अब समय आ गया है कि मेरे सबसे कठिन प्रतिद्वंद्वियों में से एक मेरे हिस्से में कदम रखे। कोच एंडी मरे का स्वागत है। जोकोविच ने अपनी आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार कहा, मैं अपने सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वियों में से एक को अपनी टीम में, नेट के एक ही तरफ, इस बार अपने कोच के रूप में पाकर उत्साहित हूं। मैं एंडी के साथ सीजन की शुरुआत करने और मेलबर्न में उनके साथ रहने का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूं, जहां हमने अपने करियर के दौरान कई असाधारण पल साझा किए हैं। मरे भी साझेदारी को लेकर उत्साहित थे। मरे ने कहा, मैं तैयारी के दौरान नोवाक की टीम में शामिल होऊंगा और उन्हें ऑस्ट्रेलियन ओपन के लिए सर्वश्रेष्ठ संभव आकार में लाने में मदद करूंगा।

मैं इसे लेकर बहुत उत्साहित हूं और बदलाव के लिए नेट के एक ही तरफ होने का इंतजार कर रहा हूं। मैं आने वाले वर्ष के लिए उनके लक्ष्यों को प्राप्त करने में उनकी सहायता करने के अवसर के लिए भी आभारी हूं। इन्फोसिस एटीपी स्टैट्स के अनुसार 2024 में जोकोविच ने 37-9 मैच रिकॉर्ड दर्ज किया। जनवरी में वह 100 करियर खिताब तक पहुंचने के लिए 11वां ऑस्ट्रेलियन ओपन खिताब जीतने का प्रयास करेंगे।

नीतिश ने सभी को चुप कर दिया जो टेस्ट टीम में उनके चयन को लेकर आशंकित थे-प्रसाद

नई दिल्ली (एजेंसी)। चयन कार्ताओं के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एमएसके प्रसाद का मानना है कि नीतीश कुमार रेड्डी के शानदार टी20 प्रदर्शन के आधार पर भारतीय टेस्ट टीम में जगह बनाने को लेकर आशंकायें थी लेकिन पर्थ में उनकी निर्भिक बल्लेबाजी ने सभी आलोचकों को चुप करा दिया है।

प्रसाद ने इस ऑलराउंडर को 12 साल की उम्र से खेलते हुए देखा है। उन्होंने पीटीआई से कहा, ''हम शुरू में टेस्ट क्रिकेट में उनके जल्दी शामिल होने को लेकर आशंकित थे लेकिन नीतीश ने ऑस्ट्रेलिया के पर्थ में शानदार शुरुआत करके सभी तरह का संदेह खत्म कर दिया।' रेड्डी ने भारत की पहली पारी में 41 रन और दूसरी पारी में 37 रन की तेज पारी खेली। प्रसाद ने तीसरे दिन का खेल खत्म होने के बाद कहा, ''नीतीश कुमार रेड्डी के शानदार पदार्पण को देखकर खुशी हो रही है जो

आंध्र क्रिकेट संघ की अकादमियों के माध्यम से व्यवस्थित तैयारी प्रक्रिया के बाद आये हैं। हमने नीतीश को 12 साल की उम्र में पहचाना जब उसके पिता उसे हमारे पास लाए। पहले दिन से ही वह प्रतिभावान खिलाड़ी लगा। '' उन्होंने बताया कि रेड्डी को किस तरह आंध्र क्रिकेट संघ के प्रतिभा खोज कार्यक्रम से पहचाना गया था।

प्रसाद ने कहा, ''शुरू में वह अंडर-14 अकादमी में था जो उसके गृहनगर से बहुत दूर थी। लेकिन उसके माता-पिता ने उसे सपनों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया और वह हमारी अकादमियों के जरिये लगातार आगे बढ़ता गया। उसने अपने कौशल के दम पर भारत की अंडर-19 टीम में जगह बनाई। '' उनका मानना ??है कि सनराइजर्स हैदराबाद ने भी उसे तेजी से आगे बढ़ाया। उन्होंने कहा, ''सनराइजर्स हैदराबाद के साथ मिले मौके ने उसकी प्रतिभा को निखारा जिससे सभी प्रारूपों में भारतीय टीम में उसके चयन का रास्ता बना।

उड़नदस्ता वाहन में वसूली का मुखिया बना पप्पू चालक, ऊपर तक की डीलिंग में बना रहा सांठ गांठ

आरटीओ का पप्पू हुआ पास बना पप्पू साहब, महीने में लाखों रुपये की करता है सेटिंग

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। आरटीओ यानी परिवहन स्क्रायड का उड़नदस्ता वाहन इन दिनों हाईवा वाहनों के लिए आतंक का पर्याय बना हुआ है जहां रीवा से लेकर सोहागी तक इधर मऊगंज और हनुमना तक के लिए निकलने वाले हाईवा वाहनों को रोककर उड़नदस्ता की टीम चालानी कार्यवाही कर रही मगर उड़नदस्ता वाहन की जिस टीम के द्वारा वाहनों को रोककर उसकी चलानी पर्ची काटी जा रही है उस वाहन में आरटीओ विभाग का कोई भी जिम्मेदार व्यक्ति सवार नहीं रहता और पप्पू नाम के व्यक्ति के द्वारा वाहनों से मैनेजमेंट बनाकर औने पौने दाम की सेटिंग बनाई जाती है। वहीं अगर कोई वाहन चालक उनकी सेटिंग में फिक्स नहीं होता तो फिर उसे चलानी कार्यवाही का डर दिखाया जाता है उसमें भी गोलमाल करके बिना प्रमाणित पर्ची को काटकर हजारों रुपए ऐंठे जाते हैं जिसमें पप्पू की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

दरअसल आरटीओ की जिस उड़नदस्ता वाहन का जिक्र हम कर रहे हैं उस वाहन का कुल मुखिया पप्पू नाम के चालक को ही बनाया गया है जिसकी मौजूदगी में ही उड़नदस्ता वाहन में सवार 2 मुंशी स्तर के कर्मचारियों के द्वारा अपने प्रभाव और वर्दी को दिखाकर पहले तो वाहनों को रोका जाता है तथा बाद में आगे की डीलिंग के लिए पप्पू नाम के प्रायवेट इंसान को आगे कर दिया जाता है जो वाहनों। से बिना पर्ची के ही सांठ गांठ करने का काम करता है और कोई भी वाहन चालक मैनेजमेंट के लिए तैयार नहीं हुए तो पप्पू साहब चलानी पर्ची का डर दिखाकर लोगों से पैसे ऐंठ लेते हैं। बताया जा रहा है कि पप्पू साहब आरटीओ की उड़नदस्ता वाहन के मैनेजमेंट से महीनों की लाखों रुपए की कमाई कर रहे हैं जिसे देखने वाला कोई भी अधिकारी नहीं है तथा उनके ही द्वारा रोज की लाई गई रकम से बड़े साहब की तनख्वाह का भी हिस्सा मिलता है जिसके बाद सभी कर्मचारी घर को रवाना हो जाते हैं। ट्रक मालिकों की मानें तो पप्पू साहब ने अपनी सेटिंग में सड़क पर चलने वाली वाहनों के लिए 5000 रुपए का रेट फिक्स किया है अगर उनके द्वारा फिक्स किए गए रेट में कोई ऊंचनीच हो गई तो फिर वाहन मालिक को सीधे अप्रमाणित पर्ची से होकर ही गुजरना होगा जिसकी राशि फिर 10 हजार के ऊपर चली जाती है और पप्पू साहब की सेटिंग किसी गैर नियम के साथ चलने वाले वाहनों के लिए नहीं है उन्होंने तो प्रत्येक वाहनों के लिए ही अपना दाम फिक्स किया हुआ है फिर चाहे वाहन नियम से चले या बिना नियम।

शिविर में 238 वृद्ध नागरिकों के बनाए गए आयुष्मान कार्ड

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासन के निर्देशानुसार 70 वर्ष अथवा उससे अधिक आयु के व्यक्तियों का निःशुल्क आयुष्मान कार्ड बनाया जा रहा है। इसके लिए विभिन्न स्थानों में शिविर आयोजित कर आयुष्मान कार्ड बनाए जा रहे हैं। इसी क्रम में सिविल लाइन स्थित अटल पार्क रीवा में 238 वृद्ध नागरिकों का आयुष्मान कार्ड बनाया गया। उल्लेखनीय है कि आयुष्मान योजना अन्तर्गत पात्र व्यक्तियों को पाँच लाख रुपए तक का निःशुल्क उपचार उपलब्ध कराया जाता है। शिविर के आयोजन में शहरी स्वास्थ्य कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ अनुराग शर्मा, डॉ अमित तिवारी, एपीएम शंकर तिवारी, आयुष्मान मित्र जनमेजय तिवारी, आशा कार्यकर्ता, एएनएम, डाटा एन्ट्री आपरेटर का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

उप मुख्यमंत्री स्कूल के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में हुए शामिल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ग्राम बहुरीबांध में स्थित जागृति इंटरनेशनल हायर सेकण्डरी स्कूल के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि जागृति इंटरनेशनल स्कूल के संचालन का यह पाँचवा वर्ष है। यह स्कूल इस क्षेत्र में अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा की कमी को पूरा कर रहा है। इस तरह के विद्यालय का संचालन होना इस क्षेत्र के लिए नितांत आवश्यक था। छोटे-छोटे बच्चों ने कार्यक्रम में बेहतरीन नृत्य प्रस्तुत किया। यह बच्चों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इससे बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। बच्चों का केवल पढ़ाई में अच्छा होना ही काफी नहीं है बल्कि उन्हें हर गतिविधि में बढ़चढ़ कर भाग लेना चाहिए। इससे उनमें आत्मविश्वास आता है। बच्चों के लिए शिक्षा और संस्कार दोनो आवश्यक है। यह उनके लिए वरदान साबित होता है। उप मुख्यमंत्री ने बच्चों को अपने बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करने की भी सीख दी। वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में स्कूल के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया और शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर विधायक मनगवां इंजीनियर नरेन्द्र प्रजापति, पूर्व विधायक सेमरिया श्री केपी त्रिपाठी, अन्य जनप्रतिनिधिगण, स्कूल की संचालिका मनीषा पाठक, प्राचार्य मोनिका द्विवेदी, शिक्षकगण, विद्यार्थी तथा उनके अभिभावक उपस्थित रहे।

अचानक सिविल लाइन थाने का निरीक्षण करने पहुंचे रीवा एसपी

रजिस्टर नहीं था अपडेट, पुलिसकर्मी बिना वर्दी में मिले, स्पष्टीकरण मांगा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मीडिया ऑडीटर द्वारा लगातार पुलिस थानों में अव्यवस्था और लापरवाही की खबरें प्रकाशित किये जाने के बाद, इस पर संज्ञान लेते हुये रीवा एसपी रविवार दोपहर अचानक सिविल लाइन थाने पहुंच गए और औचक निरीक्षण किया। एसपी ने डेटा रजिस्टर चेक किया, जिसमें कमी मिली, वह अपडेट भी नहीं था। थाने के ड्यूटी वितरण में भी लापरवाही पाई गई। जबकि कुछ पुलिसकर्मी बिना वर्दी के ही थाने में ड्यूटी देते नजर आए। इसके बाद सभी को स्पष्टीकरण के साथ प्रतिवेदन देने के निर्देश दिए हैं।

एसपी विवेक सिंह करीब एक घंटे तक थाने के अंदर मौजूद रहे और आवश्यक जानकारियां लीं। अचानक थाने पहुंचे एसपी को देख लापरवाह पुलिसकर्मियों को बहाना बनाने का मौका नहीं मिला।

निरीक्षण के बाद एसपी विवेक सिंह ने बताया कि थाने के ड्यूटी वितरण में कमी मिली है। विवेचना में थाना प्रभारी के मार्गदर्शन का आभाव दिखा। उन्होंने कहा कि कुछ लोग यूनिफॉर्म में नहीं थे, जो नियम का उल्लंघन है। स्पष्टीकरण मांगने सहित प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए हैं। कुछ मामले करीब कई सालों से सिविल लाइन थाने में लंबित हैं। इसके लिए सीएसपी और थाना प्रभारी को निर्देश दिए गए हैं कि विवेचकों का मोटिवेट कर ज्यादा से ज्यादा काम करवाएं।

शिकायतों की गिनती करते थक जायेंगे आप! एक व्यक्ति की अजीब धोखाधड़ी

रेता माफिया, बालू लोड़ ट्रकों को खाली कराकर नहीं देता रुपए, वाहनों से लाखों की ठगी उजागर

एक ट्रक खाली कराकर महीनों के लिए होता है गायब

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले में इन दिनों रेता स्कैम माफिया सक्रिय होकर काम कर रहा है जहां स्कैम माफिया के द्वारा बालू लोड़ हाईवा वाहनों से धोखाधड़ी करके उनके साथ ठगी की जा रही है मगर जिले भर के अलग अलग थानों में की जा चुकी कई शिकायतों के बाद पुलिस की टीम इस तरह के माफिया पर लगाम लगा पाने में निष्क्रिय ही रहा जिससे हाईवा वाहनों का संचालन कर रहे लोगों में खौफ का माहौल है।

दरअसल बैकुंठपुर थाना क्षेत्र में एक व्यक्ति के द्वारा करीब दर्जनभर हाईवा वाहनों के चालकों के साथ एक अजीब तरह की धोखाधड़ी की जा रही है जिसमें बालू लोड़ हाईवा वाहनों को उस व्यक्ति के द्वारा अपने चिन्हित स्थानों पर खाली करा कर वाहनों के चालकों के साथ गुंडागर्दी करते हुए उनके पैसे मारे जा रहे हैं जिसको लेकर लगभग सभी हाईवा वाहनों के मालिक और चालक द्वारा थानों में शिकायत भी दर्ज कराई गई परन्तु पुलिस की टीम उनमें कोई कार्यवाही नहीं कर सकी

बताया जा रहा है कि बैकुंठपुर क्षेत्र में एक ऐसा माफिया सक्रिय हो कर काम कर रहा है जो पहले तो बालू लोड़ हाईवा वाहनों के चालकों से संपर्क करके उनकी वाहन को खाली करा देता है उसके बाद उनके पैसों को मारकर अपनी धोखधड़ी का शिकार बना लेता है जिसकी थानों में शिकायतें में की जा चुकी हैं लेकिन उसके खिलाफ हुई शिकायतों का भी कोई असर नहीं निकला और वह आज भी हर रोज इस तरह की धोखाधड़ी की घटना को अंजाम दे रहा है

जानकारी के अनुसार शुभम सिंह नाम का व्यक्ति है जो बालू लोड़ हाईवा वाहनों को अपने मनपसंद इलाकों में खाली कराता है तथा बाद में उस बालू की कीमत अदा करने से वह मुकर जाता है। शुभम सिंह नामक व्यक्ति के द्वारा बालू लोड़ हाईवा वाहनों से धोखाधड़ी का कोई एक मामला नहीं है जिसे सार्वजनिक तौर पर धोखाधड़ी कही जाए उक्त व्यक्ति के द्वारा की गई करीब दर्जभर धोखाधड़ी की ऐसी ही घटनाएं सामने आई हैं जिससे बैकुंठपुर इलाके में जाने वाले हाईवा वाहनों के चालकों और वाहनों के मालिक में खौफ का माहौल बना हुआ है क्योंकि उसके खिलाफ इसी तरह के मामलों में थानों में शिकायतें भी लंबित है जिसपर पुलिस की टीम कोई एक्शन नहीं ले रही है जिससे उक्त व्यक्ति के द्वारा लगातार इस तरह की धोखाधड़ी की घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है।

आपको बता दें करीब एक वर्ष पूर्व सिंटू साकेत नाम के हाईवा वाहन चालक ने इस व्यक्ति के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज कराई थी उसके बाद स्वस्तिक ट्रेडर्स, हर्षण सिंह, मनोज दुबे, आनंद गौतम, त्रिजुगी नारायण शुक्ला सहित अन्य अनगिनत लोगों ने इसी तरह की धोखाधड़ी की घटनाओं पर इसी व्यक्ति के खिलाफ थानों में शिकायत की परन्तु पुलिस ने किसी भी तरह की कार्यवाही करने की बजाय उक्त युवक को संरक्षण देना शुरू कर दिया तथा अब लगातार शुभम सिंह ने अपना यह पेशा ही बना लिया है।

● यह व्यक्ति घटना को अंजाम देकर तत्काल में फरार हो जाता है और शिकायत बाद में आती है जिसके कारण हर बार यह व्यक्ति पुलिस गिरफ्त से बच जाता है फिर भी पुलिस लगातार कोशिश कर रही है कि ऐसे आरोपी को जल्द गिरफ्तार करें। इसके अलावा हमने रेत मंडी में भी जाकर इसके खिलाफ लोगों को जागरूक किया है कि ऐसे ही किसी को अपना समान विक्रय न करें। आरोपी तक बहुत जल्द पुलिस की टीम पहुंचेगी।

उमेश प्रजापति, एसडीओपी सिरमौर

उप मुख्यमंत्री ने बसामन मामा में निर्माण कार्य का किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल बसामन मामा गौवंश वन्य विहार पहुंचकर निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। उप मुख्यमंत्री ने गौवंश वन्य विहार परिसर में बन रहे नवीन कार्यालय का निरीक्षण किया। इस अवसर पर विधायक मनगवां इंजीनियर नरेन्द्र प्रजापति, पूर्व विधायक सेमरिया श्री केपी त्रिपाठी सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।

किसानों को खाद की नियमित आपूर्ति की जा रही जारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। किसानों को खाद की नियमित आपूर्ति की जा रही है। जिले में 7 डबल लाक केन्द्रों तथा सहकारी समितियों के माध्यम से खाद का वितरण किया जा रहा है। किसानों की मांग को देखते हुए अवकाश के दिनों में भी खाद का वितरण किया जा रहा है। रविवार को जवा डबल लाक केन्द्र से 67 किसानों को 327 बोरी डीएपी, 225 बोरी यूरिया और 32 बोरी सुपर फास्फेट का वितरण किया गया। इसी तरह अन्य डबल लाक केन्द्रों और सहकारी समितियों से किसानों को खाद उपलब्ध कराई जा रही है। मार्कफेड, सहकारी समिति तथा निजी विक्रेताओं के पास खाद उपलब्ध है। जिन केन्द्रों में अधिक संख्या में किसान खाद लेने पहुंच रहे हैं वहां अधिकारियों की निगरानी में टोकन देकर खाद का वितरण किया जा रहा है। सभी एसडीएम, तहसीलदार तथा नायब तहसीलदार खाद बिक्री केन्द्रों में खाद वितरण की निगरानी कर रहे हैं।

उप मुख्यमंत्री ने सेमरिया में पंडित दीनदयाल उपध्याय की प्रतिमा का किया अनावरण

दीनदयाल उपाध्याय की विचारधारा से देश का भविष्य हो रहा सुनहरा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय की विचारधारा से देश की जड़ें मजबूत हो रही हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने देश की तरक्की के लिए जो पौधा रोपा था आज वह वट वृक्ष बन गया है। उनकी विचारधारा देश को सुनहरे भविष्य की ओर ले जा रही है। देश आर्थिक महाशक्ति बनने की राह पर है। वर्ष 2047 में जब देश की आजादी के 100 वर्ष पूरे होंगे तब भारत आर्थिक महाशक्ति बनकर खड़ा होगा और दुनिया का नेतृत्व करेगा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल सेमरिया में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की प्रतिमा के अनावरण अवसर पर उपस्थित जन समुदाय को संबोधित कर रहे थे।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि पंडित दीनदयाल जी और डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी को जीवन में अनेकों कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। उन्होंने विरोधी ताकतों को अपनी विचारधारा का लोहा मनवाया। उनकी विचारधारा पर ही चलकर सरकार समाज के उत्थान के लिए कार्य कर रही है। पंडित दीनदयाल ने जो सपना देखा था उन्हें आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी पूरा कर रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से लोगों के कल्याण के लिए लगातार कार्य कर रहे हैं। उन्होंने आयुष्मान योजना लागू की। इससे गरीब से गरीब व्यक्ति भी अच्छे से अच्छे अस्पतालों में पाँच लाख रुपए तक का निःशुल्क उपचार कराने में सक्षम हो गया है। इस योजना का और विस्तार किया गया है जिसमें अब 70 वर्ष अथवा उससे अधिक आयु के नागरिकों का भी आयुष्मान कार्ड बनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत करोड़ो लोगों अपना पक्का मकान मिला है। जल जीवन मिशन योजना के तहत हर घर को नल से पानी पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। मध्यप्रदेश सरकार ने भी लाड़ली बहना योजना लागू कर महिला सशक्तिकरण को मजबूती प्रदान की है। हर तरफ पंडित दीनदयाल जी की विचारधारा को ध्यान में रखकर सरकार द्वारा कार्य किए जा रहे हैं। इस अवसर पर विधायक मनगवां इंजीनियर नरेन्द्र प्रजापति, पूर्व विधायक सेमरिया श्री केपी त्रिपाठी, श्री प्रदीप दुबे, श्री हरिनारायण, श्री अशोक गुप्ता, श्री रमाकांत मिश्रा, श्री रामरूद्र मिश्रा सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण और स्थानीयजन उपस्थित रहे।

"हम होंगे क़ामयाब अभियान" आज से होगा प्रारंभ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल पर जेंडर आधारित हिंसा की रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान "हम होंगे क़ामयाब" 25 नवम्बर से 10 दिसंबर तक चलाया जाएगा। इस संबंध में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने बताया कि जेंडर आधारित हिंसा की रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान के तहत महिला सुरक्षा संवाद विषय पर आधारित दो दिवसीय कार्यशाला 25 एवं 26 नवंबर को आयोजित की गई है। कलेक्टर ने बताया कि कार्यशाला में सरकारी समन्वय और हितधारकों की जिम्मेदारी के माध्यम से जेंडर आधारित हिंसा का समाधान, सामुदायिक पुलिसिंग, महिला सुरक्षा में सहयोगी दृष्टिकोण, जेंडर आधारित हिंसा को समझना और स्थानीय कार्यान्वयन के लिए कार्य योजनाओं का विकास, पीड़ितों के लिए समर्थन प्रणाली को मज़बूत करना, वन स्टॉप सेंटर की भूमिका और मनोवैज्ञानिक प्रभाव ,महिला सुरक्षा को बढ़ावा देना त्वरित प्रतिक्रिया तंत्र के माध्यम एम पी डायल 100 से अंतर्दृष्टि, महिलाओं की सुरक्षा कानूनों और नीतियों की समझ जैसे विषयों पर पहले दिन विषय विशेषज्ञों के साथ चर्चा होगी। कार्यशाला के दूसरे दिन "युवाओं की भूमिका बदलाव के वाहक", पीड़ितों के लिए समर्थन प्रणाली को मज़बूत करना, वन स्टॉप सेंटर की भूमिका, तकनीक आधारित जेंडर हिंसा की समझ तथा विश्वविद्यालय स्तर पर महिला सुरक्षा उपाय जैसे विषयों पर चर्चा की जाएगी।

नेशनल लोक अदालत के संबंध में सरपंचों के साथ बैठक 27 को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नेशनल लोक अदालत का आयोजन आगामी 14 दिसम्बर को किया जाएगा। इस संबंध में जिला न्यायाधीश एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने बताया कि मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशानुसार 14 दिसम्बर को नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। नेशनल लोक अदालत के आयोजन से पहले जनपद पंचायत रीवा, रायपुर कर्चुलियान तथा गंगेव के ग्राम पंचायतों के सरपंच के साथ बैठक आयोजित की जाएगी। बैठक आगामी 27 नवम्बर को दोपहर 12 बजे से जिला न्यायालय रीवा के एडीआर सेंटर में होगी।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।